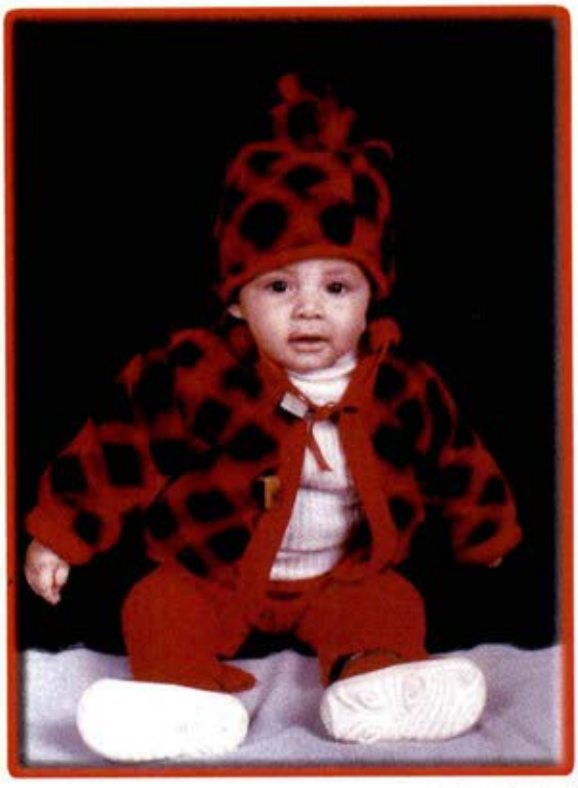
बाल भारती

जून 2005 1948 से बच्चों की सर्वप्रिय पत्रिका पृष्ठ 52 मूल्य : 7 रुपये



शीर्षक बताओ

जून 2005



छाया : अनिल शर्मा

25 जून 2005 तक इस चित्र का शीर्षक पृष्ठ 40 पर बने कूपन पर भरकर भेजें। अपना पता साफ-साफ लिखें।

शीर्षक बताओ प्रतियोगिता (फरवरी 2005) का परिणाम



पुरस्कृत शीर्षक है:

गुब्बारे से भी ऊंची हो, जीवन की उड़ान।
'कल्पना' की तरह दुनिया में करना देश का नाम।।

प्रेषक :
कृतिका भूतड़ा (14 वर्ष)
द्वारा श्री गोविन्द भूतड़ा, माहेश्वरी ऑटोपार्ट्स,
एम.जी. रोड, कन्नोद, जिला देवास (म.प्र.)

इन्हें पुरस्कार के रूप में 100 रुपये भेजे जा रहे हैं।

बाल भारती

1948 से बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

वर्ष 58 : अंक : 1 ज्येष्ठ-आषाढ़ 1927 जून 2005

कहानियां :

पांच किलो का आलू	राकेश पाण्डेय	6
पछतावा	ओमप्रकाश कश्यप	11
इनाम की साइकिल	से.रा. यात्री	16
असली राबिन्सन क्रूसो	डेनियल डेफी	18
माली काका का उपहार	प्रतुल गुप्ता	29
एलपीजी और प्रेशर कुकर का झमेला	डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'	37
लौट आया गुरु	शमशेर अहमद खान	43



रंगीन मध्य पृष्ठों पर :

- ओजोन परत की सुरक्षा 25

नियमित स्तंभ :

- विज्ञान मंच : 41
- खेल क्विज़ : 42

कविताएं :

मां जैसा मेरा जीवन है	शंकर सुल्तानपुरी	10
गरमी का प्रेत	अतुल गोस्वामी	15
हे वृक्ष देव, तुमको प्रणाम	डॉ. इन्द्रजीत सिंह	24
हिम के पौधे यहां उगाएं	अशोक जैन	36
गर्मी की दोपहरी में	सुरेश विमल	36
आओ बादल भाइया	डॉ. हरीश निगम	46
गर्मी और सूरज	यशवंत गर्ग	46

लेख एवं विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री से बातचीत

अत्यंत संवेदनशील है अंटार्टिका का पर्यावरण	प्रस्तुति : नवीन पंत	4
छुट्टियों की मस्ती और हम (परिचर्चा)	शिप्रा सिंह	32

संपादक : विभा जोशी
सहायक संपादक : सुविधा कुमरा
टेलीफोन : 23387038
विज्ञापन तथा प्रसार व्यवस्थापक :
जगदीश प्रसाद (फोन : 26108979)

आवरण : सुनील कुमार के.टी.
चित्रांकन : मनु मार्टिन
संयुक्त निदेशक (उत्पादन) :
एन.सी. मजूमदार
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

हमारी बात



बच्चो, तुम्हारी प्रिय पत्रिका 'बाल भारती' ऐसा कोई भी मौका हाथ से गंवाना नहीं चाहती जो हमें प्रकृति के नजदीक लाकर उससे हमारी दोस्ती का रिश्ता मजबूत करता हो। यही कारण है कि हमने 'बाल भारती' का यह अंक **5 जून** को मनाए जाने वाले *विश्व पर्यावरण दिवस* को समर्पित किया है।

बच्चो, दुनिया का हर देश विकसित राष्ट्र कहलाना चाहता है। आजादी के बाद हम भारतवासियों की भी यही इच्छा थी कि हमारा देश विकास के सफर की ओर बढ़े। इसी चाह के कारण हमने कई करोड़ रुपये सिंचाई, ऊर्जा, शिक्षा, परिवहन और संचार व्यवस्था जैसे ढांचागत क्षेत्रों के विकास में खर्च किए लेकिन प्रकृति के साथ हम सही तालमेल न बिठा पाए। नतीजा यह हुआ कि धरती ने सिंचाई पाकर सोना तो उगला लेकिन उसमें लवण की मात्रा हानिकारक स्तर तक बढ़ गई। प्रौद्योगिकी ने विकास की नवीन दिशाएं तो दिखाईं, लेकिन हवा और पानी को प्रदूषित कर दिया। आवागमन और परिवहन क्षेत्रों में विकास तो हुआ लेकिन उसने हमारे बहुमूल्य वनों को तहस-नहस कर दिया। इसी प्रकार स्वास्थ्य सेवाओं ने जहां जीवन-दान दिया, वहीं जनसंख्या को इस कदर बढ़ा दिया कि जनसंख्या-विस्फोट की स्थिति पैदा हो गई।

इस स्थिति से आज हम चेत गए हैं कि यदि हमें अपने देश को सम्पन्न राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा करना है तो ऐसा हम अपने पर्यावरण को गरीब बनाकर कदापि नहीं कर सकते। वैसे भी सुहाना सफर तो वही कहलाएगा, जो हमें हरी-भरी पगडंडियों, स्वस्थ हवा के झोंकों, कूकती हुई कोयलों और कजरी की तानों के साथ-साथ विकास की मंजिलों तक पहुंचाएगा।

विश्व पर्यावरण दिवस को ध्यान में रखते हुए इस अंक में विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल से उनकी अंटार्टिका यात्रा के बारे में हुई बातचीत *'अत्यंत संवेदनशील है अंटार्टिका का पर्यावरण'* शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत की जा रही है जो तुम बच्चों को अंटार्टिका के संवेदनशील पर्यावरण की जानकारी तो देगी ही, साथ ही प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने की हमारी चेतना को प्रखर बनाने में भी सहायक होगी।

यह अंक कैसा लगा, हमें लिखना न भूलना।

आपकी बात

'बाल भारती' पत्रिका से मैं 25 वर्षों से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हूं। बाल लेखन में रुचि होने के कारण प्राय: प्रवास में 'बाल भारती' खोजता एवं पढ़कर कोरिया के पुस्तकालयों में दे आता। 'छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' मनेन्द्रगढ़ इकाई के बाल सदस्यों को भी सदा 'बाल भारती' जैसी ज्ञानवर्धक संस्कारित बाल पत्रिका पढ़ने के लिए अभिप्रेरित करता रहा। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण शुरुआत में बच्चों को यह प्रेरणादायक बाल पत्रिका पढ़ने में काफी कठिनाई आती थी। लेकिन अब वे पढ़ने में रुचि लेने लगे हैं। पत्रिकाओं में सर्वप्रथम नाम 'बाल भारती' का ही है।

—सतीश उपाध्याय, जिला संयोजक, 'छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' मनेन्द्रगढ़, (कोरिया) छत्तीसगढ

'बाल भारती' का फरवरी 2005 का अंक मिला। इसे पढ़कर पता चला कि कितनी साफ-सुथरी है आम आदमी की सूझबूझ की अपेक्षा एक 'पागल की सूझबूझ'। 'पालक-पनीर' एवं 'जानवरों की बोली बोलने वाला अनोखा डॉक्टर', मर्मस्पर्शी कहानी है। 'स्पंज—एक चलता-फिरता होटल' विज्ञान से जुड़ी जानकारियां देती हैं। 'सोने का हाथी' में रोचकता है तो 'टूटा घमंड' घमंड नहीं करने की सीख देती है। खूब प्रेरक है—'प्रधानमंत्री की सरलता'।

'वैदिक काल के घर' एवं 'श्रुति और स्वर' ज्ञानवर्धक लेख हैं।

'फुलबगिया' और 'फूल' कविताओं में फूल की खुशबू, सुंदरता और कोमलता है। 'दो पंखों वाली' तितली मन को लुभाती है। जब 'मन की खिड़की' खुलती है 'परियों के संग' अच्छा लगता है।

—राधेलाल 'नवचक्र', तोता साह लेन, हसनगंज, मिरजानहाट, भागलपुर (बिहार)



मैं आपके प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'बाल भारती' का नियमित पाठक हूँ। यह पत्रिका हम बच्चों के लिए बहुत उपयोगी, ज्ञानवर्धक तथा रोचक है। मैं इस पत्रिका को पिछले कई सालों से पढ़ रहा हूँ तथा इसे पढ़ते समय मुझे अपार आनंद की अनुभूति होती है।

—मोहित महेन्द्र, कक्षा सातवीं-ए, ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

आपकी मासिक पत्रिका 'बाल भारती' बहुत अच्छी लगी। चित्र प्रतियोगिता देखकर मन चाहा कि मैं भी इसमें भाग लूं और पहला, दूसरा या तीसरा स्थान पाने पर मुझे भी शायद कुछ महीने 'बाल भारती' पढ़ने को मिल जाए। फरवरी माह की 'बाल भारती' मेरे भैय्या खरीद कर मेरे लिए लाए थे।

—अकसा नगीन, चिमनशा वली यूनिवर्स्टी रोड, अमरावती

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता :

'बाल भारती'

प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसाररण मंत्रालय

पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001

अत्यंत संवेदनशील है अंटार्टिका का पर्यावरण

भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। दिल्ली के कालेज में प्रवक्ता रहते हुए उन्होंने कानून की पढ़ाई पूरी की और आईएएस की परीक्षा पास की। उन्होंने आठ सदस्यों के भारतीय प्रतिनिधि मंडल के नेता के रूप में फरवरी 2005 में बर्फ के महाद्वीप अंटार्टिका की यात्रा की। प्रस्तुत है उनसे एक बातचीत, जिसके माध्यम से उन्होंने अंटार्टिका के अत्यधिक संवेदनशील पर्यावरण के बारे में जो कुछ देखा और समझा, उसे *'बाल भारती'* के पाठकों तक पहुंचाया।



प्रश्न : माननीय मंत्री जी, फरवरी के पहले सप्ताह में आपने अंटार्टिका की यात्रा की थी। वहां जो कुछ देखा, क्या उसके बारे में 'बाल भारती' के पाठकों को बताने की कृपा करेंगे?

उत्तर : मेरी पहली अंटार्टिका यात्रा बहुत रोमांचकारी और जानकारीपूरक रही। दुनिया के सबसे दूरवर्ती और ठंडे महाद्वीप, जहां पर तेज बर्फीले तूफान चलते हैं, में जाना अपने आप में एक चुनौती है। पेंग्विन, सील, व्हेल इत्यादि जैसे अद्‌भुत पशु-पक्षी हमें रोमांचित करने के साथ-साथ यह संदेश भी देते हैं कि परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, उनके अनुरूप अपने को ढाला जा सकता है। इसी उद्देश्य से हमारे वैज्ञानिक एवं रक्षाकर्मी पिछले 23 वर्षों से अंटार्टिका में महत्वपूर्ण अनुसंधान कर रहे हैं और जिन कठिन परिस्थितियों में रहकर ये लोग काम करते हैं उन्हें मुझे भी निकट से देखने और समझने का अवसर मिला। यहां पर मैं अपने पाठकों को बताना चाहूंगा कि अंटार्टिका विश्व का पांचवां सबसे बड़ा महाद्वीप है और लाखों वर्ष पहले अंटार्टिका एवं भारत एक बहुत बड़े सुपर महाद्वीप गोंडवानालैंड का एक भाग थे। इसका लगभग 98 प्रतिशत भाग बर्फ की मोटी परत से ढका हुआ है जिसमें विश्व का 70 प्रतिशत मीठा जल बर्फ के रूप में संचित है। यहां की बर्फ की कई किलोमीटर मोटी परतों में प्राचीन विश्व के भूगर्भीय इतिहास एवं जलवायु परिवर्तन की कहानी सुरक्षित है जिसका हमारे वैज्ञानिक अध्ययन कर रहे हैं। अंटार्टिका महाद्वीप हमारे आज के वातावरण और समुद्री प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है।

प्रश्न : भारत की वैज्ञानिक प्रगति में दक्षिण गंगोत्री का क्या महत्व और उपयोगिता है?

उत्तर : भारत का पहला अभियान दल 1981 में अंटार्टिका गया था। और दक्षिण गंगोत्री अंटार्टिका महाद्वीप पर 1983 में स्थापित किया गया। यह भारत का पहला स्थायी अनुसंधान केन्द्र था, जिसमें वैज्ञानिक

भर वहां रहकर वैज्ञानिक प्रयोग कर सकते थे। यह केन्द्र उन सब सुविधाओं से सुसज्जित था, जिनकी आवश्यकता अंटार्टिका के अत्यधिक ठंडे और बर्फीले तूफानों से प्रभावित वातावरण में रहने के लिए होती है। इस केन्द्र ने 1988 तक भारतीय वैज्ञानिकों के लिए प्रमुख अनुसंधान केन्द्र के रूप में कार्य किया। उसके बाद हमने इससे और बड़ा और आधुनिक उपकरणों और सुविधाओं से युक्त नया वैज्ञानिक केन्द्र 'मैत्री' बनाया, जो आज अंटार्टिका में भारत का प्रमुख अनुसंधान केन्द्र है।

प्रश्न : अंटार्टिका क्षेत्र में वैज्ञानिक केन्द्रों की स्थापना से वहां के पर्यावरण को खतरा तो नहीं है?

उत्तर : वस्तुत: अंटार्टिका का पर्यावरण अत्यधिक संवेदनशील है। इसके संरक्षण के लिए यहां पर जाने वाले हर अभियान दल एवं यहां पर बने सभी वैज्ञानिक केन्द्रों द्वारा पूरी सतर्कता बरती जाती है। यहां पर पाए जाने वाले सभी प्राणियों को पूरा संरक्षण प्राप्त है। हमारे वैज्ञानिकों ने मानवीय गतिविधियों से पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर अध्ययन किए हैं और विश्व के सभी अंटार्कटिक संधि देशों ने पर्यावरण संरक्षण के ऐसे दिशानिर्देश जारी किए हैं जिनका पालन करना सभी के लिए अनिवार्य है। हम लोग वहां की कठिन परिस्थितियों और आवागमन की कठिनाइयों के बावजूद हर संभव कोशिश करते हैं कि वहां के पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जाए। कूड़े-कचरे को सावधानीपूर्वक जलाना और अपशिष्ट तथा सभी हानिकारक पदार्थों जैसे पुराना मशीन का तेल, लोहे, प्लास्टिक या कांच के टुकड़े, बैटरी आदि को हर अभियान के साथ वापस लाया जाना इत्यादि हमारे प्रयासों में शामिल है। हां, मैं यह मानता हूं कि हमें इस विषय पर और अधिक सावधानी बरतनी चाहिए और मैंने अपनी हाल की यात्रा के दौरान अंटार्टिका में कार्यरत भारतीय वैज्ञानिकों एवं हमारे अभियान दल को आधारभूत सुविधाएं प्रदान करने वाले सेना के अधिकारियों को ये निर्देश दिए हैं कि पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से अत्याधुनिक उपकरण एवं संयंत्र लगाए जाएं।



मैत्री हैलीपैड पर श्री कपिल सिब्बल एवं अभियान दल के अन्य सदस्य

प्रश्न : क्या अंटार्टिका के सर्वेक्षण के लिए वहां भारतीय वैज्ञानिकों का अभियान दल भेजने की योजना है?

उत्तर : भारत विश्व के उन अठारह देशों में से एक है जो हर वर्ष अपना वैज्ञानिक अभियान दल अंटार्टिका भेजता है। हमारे वैज्ञानिक वर्ष भर वहां रहते हैं और वैज्ञानिक प्रयोग एवं केंद्र का रख-रखाव करते हैं। मैं तो चाहूंगा कि आने वाले वर्षों में विश्वविद्यालयों के मेधावी छात्र-छात्राएं भी भारतीय अंटार्टिका अभियान दलों के सदस्य बनें जिससे उन्हें कठिन परिस्थितियों में अनुसंधान करने का अनुभव प्राप्त हो।

प्रश्न : बाल भारती के पाठकों के लिए आपका क्या संदेश है?

उत्तर : हमारे देश के सर्वांगीण विकास के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान का योगदान बहुत आवश्यक है। मैं 'बाल भारती' के पाठकों से अनुरोध करूंगा कि वे मन लगाकर पढ़ाई करें और आने वाले समय में भारत को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दुनिया के अग्रणी देशों में लाने के हमारे प्रयासों को पूरा करें। ❑

—प्रस्तुति : नवीन पंत
22, मैत्री अपार्टमेंट, ए-3, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063

पांच किलो का आलू

—राकेश पाण्डेय

गोलू-भोलू खेलते-कूदते जा पहुंचे डॉ. शर्मा दादू के खेत में। कृषि विकास परिषद के डॉ. एस.डी. शर्मा माने हुए वनस्पति वैज्ञानिक हैं। इस समय वे केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान के प्रभारी भी हैं। संस्थान द्वारा डेढ़ एकड़ का एक प्लाट उन्हें मिला है। इस प्लाट में वे आलू की खेती करते हैं और उस पर शोध भी।

गोलू-भोलू के चाचू अनिल और डॉक्टर शर्मा के बेटे योगेश शर्मा बहुत अच्छे मित्र हैं। योगेश शर्मा भारतीय सैन्य सेवा में कमीशन्ड अधिकारी हैं और कैप्टन के पद पर कार्यरत हैं।

अपनी सालाना छुट्टी पर आने के बाद कैप्टन योगेश ने बच्चों को पिकनिक के लिए अपने घर आमंत्रित किया और बच्चे खुशी-खुशी अपने चाचू के साथ तीन दिन की पिकनिक पर जा पहुंचे उनके यहां।

बच्चों को तो जहां भी प्यार मिलता है, वे घुल-मिल जाते हैं परिवार के साथ। योगेश अंकल से तो वे परिचित थे ही, वहां उन्हें और भी कई सारे रिश्ते मिल गए एक साथ। उन्हें बुआ भी मिल गईं, दादी भी और दादू भी।

दादू का खेत घर के पास ही था। बच्चे भी पहुंच गए वहां खेत में। उस समय दादू खेत में अपने काम में व्यस्त थे। वे एक-एक पौधे को बड़े प्यार से देख रहे थे। उन्हें प्यार कर रहे थे और जो पौधा उन्हें ज्यादा कमजोर दिख रहा था, उसे दवाई का इंजेक्शन लगा रहे थे।

बच्चों ने तो अब तक सिर्फ डॉक्टर द्वारा मरीजों को इंजेक्शन लगाते हुए देखा था, पौधे को इंजेक्शन लगाते हुए देखकर उन्हें बहुत ताज्जुब हुआ।

बच्चों को खेत में आया देखकर दादू ने उन्हें अपने पास बुला लिया।

मुकुन्द बड़ा भी था और समझदार भी। वह सातवीं कक्षा पास कर चुका था। विज्ञान विषय की



जानकारी थी। उसने पूछ ही लिया, ''दादू! हमने अब तक आदमियों को इंजेक्शन लगते हुए देखा था। पर आप तो पौधों को भी सुई लगा रहे हैं?''

दादू ने समझाया, ''जैसे आदमी बीमार होते हैं तो उन्हें इंजेक्शन दिया जाता है, वैसे ही पौधे बीमार होते हैं तो मैं उन्हें भी इंजेक्शन देता हूं। क्या आपको मालूम है कि पौधों में भी हमारी ही तरह जीवन होता है?''

बालकों ने ना में सिर हिलाकर संकेत दिया कि उन्हें नहीं मालूम है। डॉक्टर दादू ने उन्हें बताया, ''हमारे यहां एक बहुत बड़े वैज्ञानिक थे सर जगदीश चन्द्र बोस। सबसे पहले उन्होंने ही कहा था कि पौधों में भी जीवन होता है और वे भी हम जीवित प्राणियों की तरह गम-खुशी और दर्द का अनुभव करते हैं। बोस ने तो इसके लिए एक मशीन भी बनाई थी, जो पौधों को होने वाली पीड़ा को नापती थी। अच्छा बच्चो, क्या आपको पता है कि एक पौधा होता है छुई-मुई। यह इतना संवेदनशील होता है कि जैसे ही हम इसे छूते हैं, इसकी पत्तियां सिकुड़ जाती हैं।''

मुकुन्द बोला, ''हां दादू, हमारे स्कूल में है यह पौधा। जब भी हम उधर जाते हैं तो इसे छूते हैं। खूब मजा आता है।''

''और बताऊं'', दादू ने आगे कहना शुरू किया, ''हमारा यह वनस्पति जगत बहुत ही व्यापक और



विचित्र है। तीन पौधे तो ऐसे हैं जो मांसाहारी हैं और कीड़े-मकोड़े खाते हैं। उनके भोजन करने का तरीका भी पूरी तरह विकसित है।''

''लेकिन दादू! आप इन आलू के पौधों के साथ क्या कर रहे हैं?'' गोलू ने पूछा।

दादू फिर बोले, ''सैकड़ों साल से हमारे देश में आलू की खेती की जा रही है। आलू के बीज भी वही हैं और तरीका भी। आज आलू की जो खेती की जा रही है, उसके द्वारा एक पौधे से 30/40/50 ग्राम के 6-7 आलू मिलते हैं। इस प्रकार से एक पौधे से करीब 400 ग्राम आलू पैदा होते हैं। मैं इस परंपरा को बदलने की कोशिश कर रहा हूं। मैं आलू की खेती का ऐसा तरीका खोज रहा हूं कि एक पौधे से चार आलू पैदा हों और एक-एक आलू पांच-पांच किलो का हो।''

यह सुनकर दोनों बच्चे आश्चर्य से उछल पड़े, ''बाप रे! पांच किलो का आलू?''

दादू बोले, ''क्यों नहीं? यह तो तुम अपनी आंखों से देख सकते हो कल। कल इस बगल वाले खेत से आलू की खुदाई होगी।''

बात तो लम्बी चल रही थी, पर दोपहर के खाने का समय हो चुका था। दोनों बच्चे काफी देर से बाहर थे। सो नीलम बुआ उन्हें ढूंढ़ती हुई आ गईं।

सब लोग दोपहर के खाने के लिए इकट्ठे हुए। खाना वाकई बहुत मजेदार था। सभी को खूब मजा आया, पर बच्चों के सिर पर तो पांच किलो के आलू का भूत सवार था। उन्होंने दादू से फिर बात करनी शुरू कर दी।

गोलू ने पूछा, ''दादू! क्या दूसरे पौधों के साथ भी ऐसा हो सकता है?''

दादू बोले, ''हां है न! मेरे मित्र हैं डॉक्टर गुप्ता। वे इस समय असम में हैं। उन्होंने मिर्च का एक पेड़ तैयार किया है। तुम लोगों ने देखा है मिर्च का पेड़?''

मुकुन्द ने बताया, ''हां! मैं अपने गांव गया था तो पापा ने दिखाया



था। दो-ढाई फिट ऊंचा होता है। उसमें कुछ हरी मिर्चें होती हैं और कुछ लाल।''

''हां! मिर्च तो हरी होती है जो बाद में पककर लाल हो जाती है। पर डॉक्टर गुप्ता ने मिर्च का जो पेड़ तैयार किया है, वह 32 फीट ऊंचा है।'' दादू ने बताया।

इस बार तो बच्चे क्या, बड़े भी, सभी चौंक पड़े। गोलू ने पूछा, ''32 फीट कितना ऊंचा होता है?'' बुआ बोलीं, ''लगभग सामने वाले मकान जितना।'' मुकुन्द और गोलू फिर चौंक पड़े। तीन मंजिल के जितना ऊंचा मिर्च का पेड़!

दादू ने आगे बताना शुरू किया, ''और तीन फिट की तोरी तो मेरे पास ही है। तुम लोगों ने तो देखी होगी तोरी। कितनी छोटी होती है?''

''हम देखने चलेंगे दादू आपकी तीन फिट की तोरी।''

इन्हीं बातों में खाना समाप्त हुआ। इसके बाद का दिन बच्चों ने खेलने, बुआ के साथ बातें करने और टी.वी. देखने में बिता दिया, शाम होते ही फिर दादू के पीछे हो लिए तीन फिट की तोरी देखने के लिए।

दादू बच्चों को अपने खेत के उस हिस्से की तरफ ले गए, जहां आलू के अलावा अन्य दूसरी वनस्पतियों और सब्जियों की खेती उन्होंने कर रखी थी। लौकी से भी बड़ी तोरी देखकर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। वे उछल पड़े।

मुकुन्द ने पूछा, ''क्या आपने तोरी के पौधे को भी इंजेक्शन लगाया था?''

''अरे नहीं, यह इंजेक्शन नहीं, क्रास ब्रीडिंग का कमाल है। जब दो वनस्पतियां एक दूसरे को क्रास करती हैं तो जो अगली फसल होती है, वह विलक्षण होती है। तुम यूं समझ लो कि जब दो वनस्पतियों की मिलावट की जाती है तो एक तीसरी नई चीज मिलती है।''

''इस तोरी में आपने क्या मिलाया था?'' गोलू ने पूछा।

इस तकनीक को कलम बांधना कहते हैं। खेत के इसी हिस्से में मैंने तोरी भी लगाई थी और लौकी भी। बाद में मैंने दोनों पौधों को जोड़ दिया। अब तुम जो तोरी देख रहे हो, असल में वह तोरी है ही नहीं। वह तो तोरी और लौकी की मिलावट है।''

''दादू! हमें भी कलम बांधना बताइए।'' मुकुन्द ने दादू से आग्रह किया।



"यह तो बहुत आसान है। आओ, यह देखो। दोनों पौधों के तनों को थोड़ा-थोड़ा छीलकर एक दूसरे से चिपकाकर धागे से बांध दो। उसके बाद उसके ऊपर गीला कपड़ा लपेट दो। यह ध्यान रहे कि कपड़ा सूखने न पाए। उसकी नमी बनी रहे। दस-बारह दिन में दोनों के तने एक-दूसरे से जुड़ जाएंगे। बाद में उन्हें खोल दो। पर इसके लिए जरूरी है कि दोनों पौधे एक दूसरे के आस-पास ही हों।"

"अब इसके बाद एक और जरूरी काम बचता है। तेज धार वाले चाकू से जहां कलम बांधी है, उसके तीन इंच दूर से लौकी के पौधे को तने से अलग कर दो और तोरी के पौधे को जड़ की ओर से। इस तरह से अब जो पौधा तुम्हारे पास है उसकी जड़ तो लौकी की है परंतु तना तोरी का है, और इससे जो फल प्राप्त होगा, वह तोरी और लौकी का मिला-जुला रूप होगा। है न कमाल की बात!" यह सुनकर बच्चे हंस पड़े।

इस तरह दादू से बच्चों को ढेर सारी नई-नई बातें सीखने को मिलीं। उन्हें खूब आनंद आया। बच्चे दादू के साथ खुशी-खुशी घर लौट आए और अगले दिन पांच किलो का आलू देखने का इंतजार करने लगे।

* * *

अगले दिन सुबह बच्चों को वापस दिल्ली लौटना था, आलू की खुदाई होने तक रुकने के लिए बच्चों ने चाचू को मना लिया।

अगले दिन आलू देखने की खुशी में बच्चे सुबह जल्दी उठ गए और जल्दी ही तैयार भी हो गए। खुदाई करने के लिए दादू ने मजदूर बुला रखे थे। आठ बजे मजदूर आए तो बच्चों को साथ लेकर दादू खेत पर जा पहुंचे।

मजदूरों ने खेत में आलू की खुदाई शुरू की। क्योंकि आलू पेड़ के ऊपर तो फलता नहीं। वह तो मांसल तना होता है और जमीन के अंदर पैदा होता है।

खुदाई होती रही। आलू तो बड़े-बड़े निकलते रहे। जितने बड़े आलू बाजार में मिलते हैं, उससे कई गुना बड़े, पर पांच किलो वाला आलू अभी तक नहीं मिला था। मजदूर सावधानी के साथ काम करते रहे।

तभी बच्चों के साथ दादू भी खुशी से उछल पड़े। उनकी मेहनत ओर तपस्या का फल मिल चुका था। एक बड़ा-सा आलू। दादू ने इसका वजन किया, 5 किलो 200 ग्राम।

फिर तो बड़े-बड़े आलू मिलते ही रहे। पूरे खेत में 27 आलू ऐसे मिले, जिनका वजन 5 किलो से अधिक था।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

मां जैसा मेरा जीवन है

—शंकर सुल्तानपुरी

मेरी गाथा का अंत नहीं,
मैं पृथ्वी माता धरती हूं।
मुझ पर विस्तार सृष्टि का है,
कुछ जलमय हूं, कुछ परती हूं।

मैंने देखे कितने वसंत,
कितने पतझर, कितनी घातें।
मैं सहनशील, इसलिए न मुझको,
डिगा सकीं कटु आघातें।

मेरी छाती पर यह दुनिया,
नित नाटक नया रचाती है।
जब जैसा जी चाहा उसका,
वह नाना खेल दिखाती है।

मैं दिखती हूं कठोर ऊपर से
मेरे अंतर में पानी है।
सच पूछो तो मेरे उत्थान-
पतन की बड़ी कहानी है।

सहना मेरा आभूषण है—
सहती हूं, सहकर जीती हूं।



मुझको मत समझो प्राणहीन,
मैं नहीं नेह से रीती हूं।

मत पूछो कितनी पीर सही,
मानव का स्वप्न सजाने में।
क्या बतलाऊं कितने हीरे-मोती,
हैं मेरे खजाने में।

मेरे तन पर गहरा सागर,
नदियां, जंगल, पर्वत, खाई।
मैं कर्मभूमि, मैं तपोभूमि,
कवियों ने है महिमा गाई।

यह बतलाते हैं धर्मग्रंथ,
मैं शेषनाग की थाती हूं।
मां जैसा मेरा जीवन है,
धरती माता कहलाती हूं।

—साहित्य वाटिका
13/362, इंदिरा नगर,
लखनऊ-226016

पछतावा

—ओमप्रकाश कश्यप

दादाजी की लाडली छवि। घर में हो तो पल-भर भी उनसे दूर नहीं रह पाती। उठना-बैठना, खाना-पीना, खेलना-कूदना यहां तक कि सोना-रहना भी उन्हीं के साथ। मम्मी के साथ-साथ सभी कहते हैं कि वे छवि के दादा नहीं उसके दोस्त हैं...सहेलियों से भी बढ़कर।

छवि अपनी छत पर पहुंची तो दादाजी को कुर्सी पर ऊंघते हुए पाया। बराबर में ही छोटी-सी कुर्सी भी रखी थी। उसे दादाजी ही पिछले साल नौचंदी के मेले से लाए थे। घर के सामने था कदंब का ऊंचा-सा पेड़। खूब फैला हुआ। इतना कि उसकी बड़ी-बड़ी डालियां अपनी गाढ़ी छाया से छत को ढांपें रखतीं। गर्मी और धूप उन्हें भेद नहीं पाती थीं। कदंब के चौड़े पत्तों के नीचे से होकर हौले-हौले गुजरने वाली सुहावनी हवा के झोंके मन को बहुत आराम पहुंचाते। गर्मी उन्हें पार करते-करते शीतल स्पर्श में बदल जाती।

दादाजी का वही सबसे पसंदीदा ठिकाना है। साथ में छवि का भी। सुबह दादाजी के साथ टहलने के बाद वह स्कूल चली जाती। लौटती तो दादाजी को उसी स्थान पर पाती; अपने काम के साथ-साथ इंतजार करते हुए। आने के साथ ही दोनों में गपशप शुरू हो जाती। साथ-साथ खेलते, बातचीत करते, लिखते-पढ़ते हुए कब शाम ढलती, कब रात आ घेरती—दोनों को इसका पता ही नहीं चलता था। पर आज छवि की छुट्टी कुछ जल्दी हो जाने से वह समय से पहले ही घर पहुंच गई। दादाजी को इसका अंदाजा ही नहीं था। वे हमेशा की तरह कुछ लिख-पढ़ रहे थे। बीच में अचानक झपकी आ गई।

छवि ने मेज पर फैले कागजों की ओर देखा। एक कविता पर उसकी आंखें ठहर गईं। छवि लिखावट को पहचानती थी। साथ में उन पंक्तियों को लिखने वाले को भी....

कितने अच्छे थे वे दिन
नदियां जब पवित्रता लाती थीं
सागरों में नहीं उतरता था जहर
सीपियों में भरे होते थे सपने
बारिश में पानी नहीं
अमृत झरता था
इंद्रधनुष जब नहीं था मैला
कितने अच्छे थे वे मौसम
कितने अच्छे थे वे दिन।

कविता बस इतनी ही लिखी गई थी। शायद इससे आगे भी कुछ हो। पर आगे की पंक्तियां अभी बन नहीं पाई थीं। दादाजी संभवत: उन्हीं के बारे में सोच रहे हों और झपकी आ गई हो—छवि ने सोचा। तभी जीने पर कदमों की आहट सुनाई दी। आने वाली छवि की मम्मी थीं। वे नाश्ता लेकर आई थीं। सहसा दादाजी की आंखें भी खुल गईं।

"अरे! छवि बेटा, तुम कब आई?" दादाजी ने चौंककर पूछा।

"बस थोड़ी देर पहले ही।" छवि ने बताया।

"हूं...आज तुमने स्कूल में नया क्या सीखा?" दादाजी का यह लगभग रोज का सवाल था। छवि के स्कूल से लौटते ही वे सबसे पहले यही प्रश्न करते। छवि हमेशा की तरह तैयार थी—

"आज हमारी टीचर ने धरती के सुरक्षा कवच ओजोन छतरी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने हमें समझाया कि धरती पर खतरनाक गैसों के बहुत अधिक इस्तेमाल से ओजोन छतरी में छेद होने लगे हैं।"

"एकदम ठीक कहा उन्होंने... अपने सुख और आराम की होड़ में हम प्रकृति को ही मिटाने पर तुले हैं। यह जानते हुए भी कि प्लास्टिक-कचरा, खतरनाक गैसें हमारे जीवन में असंतुलन पैदा करती हैं फिर भी

लोग उनका दनादन प्रयोग करते आ रहे हैं। हमें जल्दी ही संभलना होगा। नहीं तो...'' कहते-कहते दादाजी रुक गए। फिर बात बदलते हुए बोले—''लो तुम यह केला खाओ।''

''बस मैं बहुत खा चुकी हूं। आपने तो कुछ लिया ही नहीं दादाजी।''

''कैसे नहीं खाया....देखो मेरा पेट कितना फूल चुका है।'' इसके साथ ही दादाजी ने सांस रोककर पेट फुलाते हुए उस पर हाथ फिराया। उनकी इस हरकत पर छवि को हंसी आ गई। उसने केला ले लिया। दादाजी आगे बताने लगे—

''ओजोन छतरी हमारी धरती का सुरक्षा कवच है। यह पराबैंगनी किरणों को हम तक पहुंचने नहीं देता। मगर कारखानों, दफ्तरों और हमारे घरों में फ्रिज और एयरकंडीश्नर से निकलने वाली फ्लोरीन जैसी खतरनाक गैसों से यह सुरक्षा-कवच तेजी से छीजने लगा है। इसे तुरंत रोकना होगा वरना...''

वे दोनों बातचीत कर ही रहे थे कि नीचे से धुएं का बवंडर-सा उठा, तेज, गहरा और काला धुआं। दोनों का दम घुटने लगा। आंखों से पानी झरने लगा। उससे बचने के लिए छवि छत के दूसरे सिरे की ओर भागी। अपनी छड़ी संभालते हुए दादाजी ने भी वहां से हटना चाहा, मगर कमजोर और बूढ़ा शरीर एकाएक संभल न सका। हड़बड़ी



में वे छत पर ही लुढ़क गए। चश्मा आंखों से छिटककर दूर जा गिरा। यह देखते ही छवि की चीख निकल पड़ी। धुएं की परवाह किए बिना वह दादाजी को संभालने के लिए दौड़ी। नीचे से उसकी मम्मी आ गई। दोनों ने बड़ी मेहनत से दादाजी को बिस्तर तक पहुंचाया।

दादाजी के पैर में मोच आई थी। डॉक्टर ने आकर मोटी पट्टी बांध दी। पल भर में ही इस दुर्घटना की खबर पूरे मुहल्ले में फैल गई। उनसे मिलकर हाल-चाल जानने के लिए मुहल्ले से लोग आने लगे। छवि के मम्मी-पापा दोनों दादाजी की खूब सेवा करते। स्कूल से लौटते ही छवि भी दादाजी के सिरहाने बैठ जाती। दोनों वहीं पर बातचीत करते रहते। इस मुहल्ले के करीब-करीब सभी लोग, बूढ़े-बच्चे और जवान दादाजी से मिलकर जा चुके थे—सिवाय सक्सेना जी के जिनका घर मुहल्ले में सबसे बड़ा था—एकदम कोने का और भव्य। वे लोगों से बहुत कम मिलते-जुलते थे। इस कारण मुहल्ले-भर में उनकी छवि एक घमंडी अधिकारी की बनी हुई थी।

लगातार उपचार और समय पर देखभाल से दादाजी की हालत संभलने लगी। सप्ताह-भर में ही वे

बिस्तर से उठकर चलने-फिरने लगे। उस दिन रविवार था; यानी छवि की स्कूल से छुट्टी...दादाजी ने पिछली शाम को ही पार्क में टहलने के लिए कह दिया था। सुनते ही छवि की बांछें खिल गई थीं। जब से दादाजी ने बिस्तर थामा था तब से वह भी घर में ही बंद थी। उसके लिए यह दोहरी खुशी थी—एक तो दादाजी के स्वस्थ होने की....दूसरे उनके साथ सैर पर निकलने का उल्लास।

सुबह छवि की आंखें कुछ जल्दी ही खुल गईं। बिस्तर से उठी तो दादाजी को इंतजार करते हुए पाया। दोनों बाहर आए। दादाजी कुछ लंगड़ा कर चल रहे थे।

''बहुत दर्द होता है ना?'' साथ चलती हुई छवि ने पूछा जैसे खुद उसे तकलीफ हो रही हो। दादाजी की बांह थामे वह साथ-साथ चल रही थी।

मार्च का पहला सप्ताह था। पतझड़ की शुरुआत...इस कारण सड़क के दोनों ओर पेड़ों से झड़े हुए पत्तों का ढेर लगा था। सामने ही सक्सेना जी का बड़ा-सा मकान था। अचानक उन दोनों की निगाह उनके घर के आगे लगे राख के ढेर पर पड़ी। उसे देखते ही दादाजी की आंखों में घनी उदासी समा गई। छवि उसका कारण समझ न पाई। वह दादाजी से पूछने ही जा रही थी कि सक्सेना जी को अपने मकान से तेजी से बाहर आते हुए देखा।



''नमस्ते प्रधान जी!'' छवि के दादाजी कालोनी के वर्षों तक प्रधान रह चुके थे। इस कारण मुहल्ले के सभी लोग उन्हें प्रधान जी कहकर बुलाते थे।

''नमस्कार जी! कहिए सकुशल तो हैं?'' दादाजी ने कहा।

''आपका आशीर्वाद है... दरअसल मैं बहुत दिनों से आपसे मिलना चाहता था। परंतु मन पर बहुत भारी बोझ था। इस कारण हिम्मत नहीं पड़ रही थी। आज आपको सामने देखकर बड़ी मुश्किल से साहस जुटा पाया हूं।''

''ऐसा क्या हुआ?'' दादाजी ने हंसकर पूछा।

''मैं खुद को एक साथ दो अपराधों के लिए जिम्मेदार मानता हूं। आप माफ करने का वचन दें, तभी कुछ कह पाऊंगा।'' सक्सेना जी ने कहा।

''आपकी बातें मुझे तो पहेली जैसी लग रही हैं। साफ-साफ कहिए...'' दादाजी ने प्यार से कहा।

''उस दिन मैं जानबूझकर नासमझी कर बैठा था। मेरी कोठी के सामने सूखे पत्तों का अंबार लग गया था। मैंने सफाई कर्मचारी से

उसे उठाने को कहा। मगर उसने आनाकानी की। इस पर मुझे गुस्सा आ गया। तब मैंने खुद ही आसपास के सूखे पत्तों को जमा किया और आग लगा दी। तेज लपटों के साथ घना-काला धुआं आसमान में छा गया। उस समय तो मैं जोश और उत्तेजना से उन आसमान छूती लपटों को देख रहा था। यह भी भूल चुका था कि मेरे उस काम से पड़ोसियों को परेशानी भी हो सकती है। थोड़ी ही देर बाद मुझे आपके साथ हुई दुर्घटना की जानकारी मिली। तब मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ। मैं उसी समय आपसे माफी मांगना चाहता था। मगर सच मानिए मेरी हिम्मत ही नहीं पड़ी। आज मैं अपराधी बना आपके सामने खड़ा हूं। हो सके तो मुझे..." कहते-कहते सक्सेना जी की आवाज भारी हो गई।

"मेरे साथ जो हुआ सो ठीक। मगर इतने पढ़े-लिखे और समझदार होकर भी आप कैसे भूल गए कि सूखे पत्तों को जलाने से हवा प्रदूषित हो जाती है। इससे कहीं ज्यादा अच्छा है कि उन्हें जलाने के बजाए मिट्टी में दाब दिया जाए, तब वे खाद का काम कर दोहरा लाभ पहुंचाते हैं।"

"सब मालूम था। बल्कि दूसरों को ऐसा करने के लिए कहता भी था। मगर उस दिन गुस्से से मेरी मति मारी गई थी।" सक्सेना जी के स्वर में पछतावा भरा था।

"गलती हुई है तो उसका प्रायश्चित्त भी होना चाहिए।" कुछ देर तक सोचने के बाद दादाजी बोले।

"जी...तभी मेरे मन को शांति मिलेगी...आप आदेश दें।"

"प्रायश्चित्त दूसरों के आदेश से नहीं, सच्चे मन से किया जाता है।"

"तब आप ही कोई उपाय बताएं।"

"ठीक है, मैं जो उपाय बताऊंगा उसमें अकेले आप ही प्रायश्चित्त में शामिल नहीं होंगे बल्कि मैं भी आपके साथ रहूंगा। मुझे उम्मीद है कि मुहल्ले के अन्य लोग भी हमारा साथ देंगे। हम सब मिलकर लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने का काम करेंगे।"

"मुझे स्वीकार है। इसके साथ-साथ वृक्षारोपण का काम भी चलता रहेगा। शहर भर में नए-नए पौधे लगाने के लिए जितने भी धन की जरूरत होगी वह मैं अपनी ओर से खर्च करूंगा।"

"जैसा आप चाहें..." दादाजी ने अपनी छड़ी संभाली और आगे बढ़ गए।

उस दिन छवि जब स्कूल से लौटी तो दादाजी की कापी में एक नई कविता और जुड़ चुकी थी...

कितने अच्छे हैं ये दिन
आदमी जब जीता है
औरों के लिए भी
करता है चिंता दूसरों के सुख की
जुटाता है उम्मीदें सभी के लिए
गलती करता है
तो पछताता भी है
फिर जुट जाता है नए सिरे से
नए सपनों और उम्मीदों के साथ
कितने अच्छे हैं ये दिन!
आदमी जब काम आता है
दूसरों के। ❑

—जी-571, अभिधा, गोविंदपुरम्
गाजियाबाद-201002

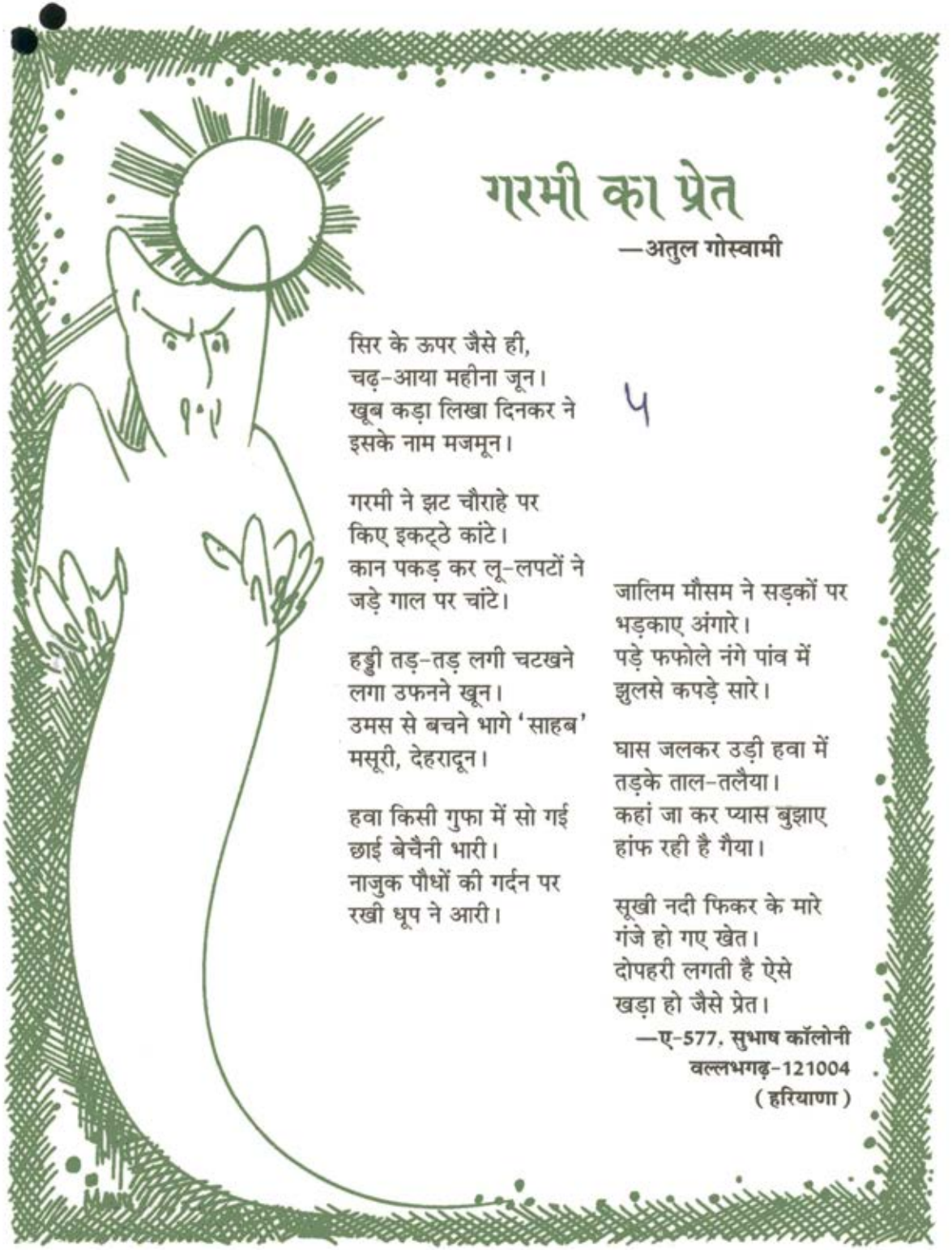
(पृष्ठ 9 का शेष)

यह पहला आलू दादू ने बच्चों को उपहारस्वरूप भेंट कर दिया।

आलू के साथ दादू, दादी, बुआ और अंकल से विदा लेकर बच्चे खुशी-खुशी घर लौट आए। वे पूरे रास्ते सबको तरबूज के बराबर का आलू दिखाते रहे।

घर पहुंच कर भी कई दिनों तक बच्चों ने इस आलू की नुमाइश लगाई और मोहल्ले के सभी लोगों को दिखाया और अंत में बच्चों की मम्मी ने इस एक आलू से पूरे एक हफ्ते तक परिवार को सब्जी खिलाई। ❑

—जे-281/86, गली नं. 9,
करतार नगर, दिल्ली-110053



गरमी का प्रेत

—अतुल गोस्वामी

सिर के ऊपर जैसे ही,
चढ़-आया महीना जून।
खूब कड़ा लिखा दिनकर ने
इसके नाम मजमून।

गरमी ने झट चौराहे पर
किए इकट्ठे कांटे।
कान पकड़ कर लू-लपटों ने
जड़े गाल पर चांटे।

हड्डी तड़-तड़ लगी चटखने
लगा उफनने खून।
उमस से बचने भागे 'साहब'
मसूरी, देहरादून।

हवा किसी गुफा में सो गई
छाई बेचैनी भारी।
नाजुक पौधों की गर्दन पर
रखी धूप ने आरी।

जालिम मौसम ने सड़कों पर
भड़काए अंगारे।
पड़े फफोले नंगे पांव में
झुलसे कपड़े सारे।

घास जलकर उड़ी हवा में
तड़के ताल-तलैया।
कहां जा कर प्यास बुझाए
हांफ रही है गैया।

सूखी नदी फिकर के मारे
गंजे हो गए खेत।
दोपहरी लगती है ऐसे
खड़ा हो जैसे प्रेत।

—ए-577, सुभाष कॉलोनी
वल्लभगढ़-121004
(हरियाणा)

इनाम की साइकिल

—से.रा. यात्री

मेरे स्कूल में कबड्डी की एक जबरदस्त टीम है। इसके खिलाड़ी जिले के और जिले के बाहर के स्कूलों में खेलने जाते रहते हैं। इस साल जनवरी में यह टीम एक स्कूल में टूर्नामेंट के सिलसिले में खेलने गई थी। टीम के कप्तान ने अकेले ही दूसरी टीम के सात खिलाड़ियों को हरा दिया। हारे हुए खिलाड़ियों तथा उनकी टीम के कप्तान ने भी हमारे स्कूल के कप्तान की खुले दिल से प्रशंसा की।

उस स्कूल के प्रधानाचार्य ने ट्राफी (वैजयन्ती) के साथ-साथ कप्तान रोशन सिंह को खुश होकर एक साइकिल भी पुरस्कार स्वरूप प्रदान की।

ट्राफी तो धूमधाम के साथ क्रीड़ा कक्ष में सजाकर रख दी गई पर चूंकि साइकिल अकेले कप्तान रोशन सिंह को मिली थी इसलिए उसे वह अपने घर ले गया।

आठ-दस दिनों तक रोशन सिंह साइकिल पर ही कालिज आता रहा। इसके बाद कबड्डी की टीम का एक खिलाड़ी रोशन सिंह से किसी बहाने से साइकिल मांगकर ले गया। कई दिनों तक उसने साइकिल नहीं लौटाई। कुछ दिनों बाद रोशन सिंह से एक और खिलाड़ी साइकिल मांगने आ पहुंचा। रोशन सिंह ने उस खिलाड़ी का नाम बतला दिया जिसके पास से साइकिल तब तक लौटी नहीं थी।

गरज यह कि रोशन सिंह के पास वह साइकिल नहीं लौटी। वह एक खिलाड़ी से दूसरे खिलाड़ी के पास शटलकाक की तरह आती-जाती रही। मगर रोशन सिंह को अपनी साइकिल वापस लौटने की प्रतीक्षा बराबर बनी रही।

इसी दौरान एक मैच में भाग लेने के लिए पूरी टीम को क्रीड़ा स्थल पर बुलाया गया। क्रीड़ा अध्यक्ष ने कबड्डी के खिलाड़ियों को उत्साहित करते हुए कहा, "देखो पिछली बार हमारी टीम को कितनी भारी सफलता मिली थी। रोशन सिंह को अच्छा खेलने के एवज में साइकिल भी मिली थी। तुम लोग अगर बढ़िया खेलोगे तो जरूर ही



ई बढ़िया उपहार लेकर लौटोगे।''

क्रीड़ा अध्यक्ष महोदय की इस शुभकामना पर सभी खिलाड़ियों ने एक दूसरे की ओर कनखियों से देखा। वे सब भेद भरे ढंग से मुस्कराने लगे। पर बेचारे रोशन सिंह को, जो अब भी टीम का कप्तान था यह तक पता नहीं था कि उसको इनाम में मिली साइकिल किसके पास है।

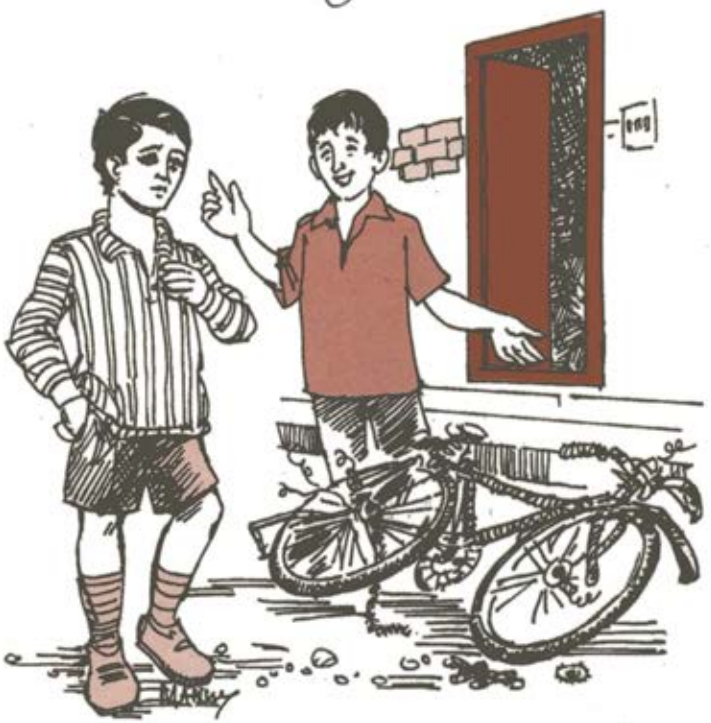
जिस दिन कबड्डी की टीम मैच खेलने के लिए बाहर जाने वाली थी—एक खिलाड़ी साइकिल का भ्रम पैदा करने वाला कबाड़ रोशन सिंह के घर पर लेकर आया। उसे रोशन सिंह के दरवाजे पर टिकाने की कोशिश करते हुए वह रोशन सिंह से बोला, ''भैया रोशन सिंह, तुम्हारी साइकिल मेरे पास तो इसी हालत में पहुंची थी। अब मैं इसका क्या करता? जैसी भी है अब तुम्हीं इसे संभालो।''

रोशन सिंह जल-भुनकर बोला, ''इसका कुछ कर क्यों नहीं सकते? इसकी मौत पर कबड्डी की टीम की ओर से एक शोक प्रस्ताव तो पास करा ही सकते हो।''

साइकिल के मुर्दे को ढोकर लाने वाला खिलाड़ी बोला, ''मेरी मानो तो इसे किसी कबाड़ी के हाथ बेच डालो।''

''यह शुभ काम भी तुम ही कर डालो।'' कहकर रोशन सिंह चुप हो गया।

वह खिलाड़ी साइकिल के



अंजर-पंजर उठाकर किसी कबाड़ी की खोज में निकल गया।

शाम को स्टेशन रवाना होने से पहले कबड्डी की टीम के सभी खिलाड़ी स्कूल के मैदान पर आ गए। साइकिल का ढांचा रोशन सिंह के घर पर लेकर आने वाला खिलाड़ी रोशन सिंह के पास जाकर धीमे स्वर में बोला, ''रोशन भाई! साइकिल बेचने के चक्कर में मेरी जान आफत में पड़ गई। उस ढांचे को तो कोई मुफ्त में भी लेने को तैयार नहीं था। वह तो मैंने कबाड़ी की आंखों में धूल झोंककर उसे किसी तरह बीस रुपए में बेच दिया।'' यह कहने के बाद उसने अपनी जेब से बीस रुपए निकालकर रोशन सिंह की ओर बढ़ा दिए।

रोशन सिंह उन रुपयों को लेकर अजीब चक्कर में पड़ गया। उसकी इनामी और नई साइकिल की उसे यह कीमत मिलेगी यह तो वह सोच भी नहीं सकता था।

रोशन सिंह को चुप और उदास देखकर वह खिलाड़ी बोला, ''देखो रोशन भाई! कबड्डी का मैच तो हम सभी खिलाड़ियों ने मिलकर ही खेला था। कोई ज्यादा अच्छा और कोई कम अच्छा खेलता है पर टीम तो किसी एक के जिताने से नहीं जीतती। तुम ज्यादा अच्छा खेले थे तो तुम्हें साइकिल मिल गई पर इनाम पर तो बाकी सभी खिलाड़ियों का भी हक था। साइकिल भी टीम के

(शेष पृष्ठ 31 पर)

असली राबिन्सन क्रूसो

—डेनियल डेफी

23 अप्रैल 1719 को इंग्लैंड में एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी उसका नाम था— 'लाइफ एंड स्ट्रेंज सरप्राइजिंग ऐडवंचर्स ऑफ राबिन्सन क्रूसो मैरिनर, रिटन बाई हिमसैल्फ (नाविक राबिन्सन के जीवन और विचित्र, आश्चर्यजनक साहसिक कारनामों की कहानी उसी की जबानी)। इसके लेखक थे प्रसिद्ध ब्रिटिश पत्रकार डेनियल डेफी। पिछले 286 वर्षों में इस पुस्तक का विश्व की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ और करोड़ों प्रतियां बिकीं। सब देशों के बच्चों में यह रोमांच कथा अत्यंत लोकप्रिय है। आज इसे 'राबिन्सन क्रूसो' के नाम से जाना जाता है। यों डेनियल डेफी (1660–1731) ने अनेक पुस्तकों की रचना की। किंतु उनकी यही पुस्तक सबसे मशहूर है। इसे विश्व बाल साहित्य की अमूल्य धरोहर माना जाता है।

लेखक परिचय

लेकिन यहां हम राबिन्सन क्रूसो की कहानी नहीं दोहराएंगे। राबिन्सन क्रूसो काल्पनिक पात्र था। असल में डेनियल डेफी ने एक नाविक के जीवन की सत्य घटना को आधार बनाकर अपनी पुस्तक की रचना की थी। उस नाविक का नाम था ऐलेक्जेंडर सेलकिर्क। वह स्काटलैंड के गांव लारगो का रहने वाला था। एक बार वह 4 वर्ष से अधिक समय तक चिली के निर्जन जुआन फर्नान्डेज द्वीप पर फंस गया था। यह द्वीप प्रशांत महासागर में है। बाद में 1709 में वुड्स रोजर्स नामक नाविक ने उसे निर्जन द्वीप से बचाया था। रोजर्स ने सेलकिर्क के बारे में अपनी पुस्तक 'ए क्रूजिंग वायेज राउंड द वर्ल्ड' में पूरा विवरण लिखा था। रोज़र्स की यह पुस्तक 1712 में प्रकाशित हुई थी।

रोज़र्स और डेनियल डेफी दोस्त थे। कहा जाता है डेनियल डेफी सेलकिर्क से भी मिले थे। प्रस्तुत है 'असली राबिन्सन क्रूसो' की कथा।

स्पष्ट है अगर एलेक्जेंडर सेलकिर्क न होता तो 'राबिन्सन क्रूसो' जैसी महान रोमांच कथा कभी न लिखी जाती। और यदि वुड्स रोज़र्स ने सेलकिर्क को निर्जन द्वीप से न बचाया होता तो शायद सेलकिर्क वहीं प्राण त्याग देता और कोई उसके बारे में कुछ न जान पाता। प्रस्तुत है 'असली राबिन्सन क्रूसो' की रोमांच कथा :

एक था एलेक्जेंडर सेलकिर्क। वह स्काटलैंड के एक गांव लारगो में रहता था। लारगो एक छोटा-सा गांव था। सेलकिर्क के पिता लारगो में जूतों का काम करते थे। सेलकिर्क उनके सात बेटों में सबसे छोटा था। भाई लोग अक्सर उसे 'सेवंथ सन' कहकर उसकी खिल्ली उड़ाया करते थे। पिता उसे आलसी कहते तो मां पेटू कहकर ताने दिया करती थीं।

छोटे सेलकिर्क की समझ में नहीं आता था कि आखिर वह किससे फरियाद करे, इसलिए वह सबसे अलग-अलग रहने लगा था। लारगो सागर तट पर बसा था। जब और कुछ न सूझता तो सेलकिर्क सागर तट पर जा खड़ा होता। वह नाविकों को बड़ी नौकाओं में बैठकर परदेस जाते देखता। सोचता, 'क्या किसी दिन मैं भी उनकी तरह सागर यात्रा पर जा सकूंगा?' उसे लगता था, शायद नाविक बनकर वह चैन से रहेगा लेकिन नन्हे सेलकिर्क को पता नहीं था कि एक नाविक का जीवन कितना कठिन और संघर्षपूर्ण होता है। कई नाविकों को उसने

दूर देशों के किस्से सुनाते देखा था नाविकों की कथाएं उसे रोमांचक लगती थीं।

रविवार को सेलकिर्क को पिता के साथ गिरजाघर जाना पड़ता। पादरी के लंबे भाषण से वह ऊबने लगता। एक बार भाषण के बीच सेलकिर्क को नींद आ गई। प्रार्थना के बाद पादरी ने उसे बुलाकर डांटा। इस बात पर सब लोग व्यंग्य से हंस पड़े और उसके पिता सेलकिर्क से बहुत नाराज हो गए।

उस दिन सेलकिर्क को खाना नहीं दिया गया। उसे एक कोठरी में बंद कर दिया गया। वह रोता-सिसकता रहा, पर उसके आंसू पोंछने कोई नहीं आया। सेलकिर्क को आशा थी कि मां आकर उसे प्यार करेंगी, खाना खिलाएंगी। सेलकिर्क की मां सचमुच बेटे से प्यार करती थीं, पर उस रात वह चाहकर भी उसके पास नहीं आ सकी क्योंकि पिता ने मां को सेलकिर्क को खाना खिलाने के लिए सख्ती से मना कर दिया था।



आधी रात बीत गई। सब तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। सेलकिर्क ने तय कर लिया कि अब वह घर में नहीं रहेगा और यहां से बहुत दूर चला जाएगा। अगली सुबह मां ने कोठरी का दरवाजा खोला तो सेलकिर्क अंदर नहीं था। खुली खिड़की ने मां को बता दिया कि उनका सातवां बेटा रूठकर कहीं चला गया है।

कई वर्ष बाद एलेक्जेंडर सेलकिर्क लारगो वापस लौटा। इस बीच वह कुशल नाविक बन गया था। उसने दूर-दूर की यात्राएं की थीं। अब उसे मां की याद आ रही थी।

सेलकिर्क को उम्मीद थी कि अब उसके प्रति घर वालों का व्यवहार बदल गया होगा, पर बड़े भाइयों को उसका लौटना अच्छा न लगा। मां के बारे में पूछा तो पता चला कि मां दो वर्ष पहले चल बसी थीं। यह सुनते ही सेलकिर्क रो पड़ा। वह मां की कब्र पर आंसुओं के फूल चढ़ाने के लिए कब्रिस्तान की ओर दौड़ चला।

कब्रिस्तान में चौकीदार ने सेलकिर्क को बताया कि मां उसे देखना चाहती थीं, लेकिन उसके बारे में किसी को कुछ पता ही नहीं था। काफी देर तक सेलकिर्क मां की कब्र के पास उदास बैठा रहा। फिर घर लौटा तो पिता मिले, पर उनका व्यवहार पहले जैसा ही रूखा था। सेलकिर्क मां के बिना स्वयं को पूरी

तरह उपेक्षित महसूस कर रहा था। इसलिए उसी रात वह फिर से अगली यात्रा पर निकल पड़ा।

एलेक्जेंडर सेलकिर्क की नई समुद्र यात्रा शुरू हो गई थी। इस बार की यात्रा बहुत कठिन थी। सेलकिर्क और जहाज के कप्तान के बीच संबंध बिगड़ रहे थे। कप्तान सेलकिर्क को कठिन से कठिन काम सौंपता था। उसे आराम करने का भी मौका नहीं मिलता था। ऊपर से भोजन का भी कुछ ठिकाना नहीं था। सेलकिर्क की तरह दूसरे कई नाविक भी कप्तान के व्यवहार से परेशान थे।

आखिर इन लोगों ने कप्तान के विरुद्ध विद्रोह करने का निश्चय किया। इनकी योजना थी कि रात के समय कप्तान को बंदी बना लिया जाए। लेकिन कुछ न हो सका। कप्तान को पहले ही नाविकों की योजना की खबर मिल चुकी थी। उसने सेलकिर्क और उसके साथी नाविकों को कैद कर लिया।

उस समय सेलकिर्क का जहाज चिली के निकट जुआन फर्नांडीज द्वीप के पास से गुजर रहा था। कैद में एक रात सेलकिर्क को सपना आया कि उसका जहाज पानी में डूब रहा है। वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। उसने कप्तान से कहा कि वह इसी समय जहाज से उतरना चाहता है। कप्तान तो सेलकिर्क से पीछा छुड़ाना ही चाहता था। उसने सेलकिर्क को निर्जन जुआन फर्नांडीज द्वीप के पास उतार दिया।

द्वीप पर पहुंचने के कुछ देर बाद सेलकिर्क को लगा जैसे इस निर्जन द्वीप पर उतरकर उसने बहुत बड़ी भूल की है। वह फिर से जहाज पर लौटना चाहता था, लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था, जहाज तो कब का तट से दूर चला गया था। लेकिन सेलकिर्क का सपना झूठ नहीं था। कुछ दिन बाद ही उसका जहाज समुद्र में डूब गया। सेलकिर्क को यह बात कई वर्षों बाद पता चली।



निर्जन द्वीप पर एलेक्जेंडर सेलकिर्क के जीवन का सबसे खराब अध्याय शुरू हुआ। जुआन फर्नांडीज द्वीप ज्वालामुखी लावे से बना था। वहां सेलकिर्क के अतिरिक्त और कोई मनुष्य नहीं था। अगर थीं तो कुछ बकरियां, चूहे और बिल्लियां।

सेलकिर्क ने तट के पास एक गुफा में अपना ठिकाना बनाया। रात को उसे अंधेरे में भयानक आवाजें सुनाई देतीं। हवा गुफाओं और ऊंचे पेड़ों के बीच से गुजरते समय जोर-जोर से शोर करती थी। इससे वह बुरी तरह डर जाता। जलती लकड़ियों का पीला प्रकाश उसे हिम्मत बंधाता लेकिन कितनी देर!

कभी-कभी रात में तूफानी हवा



बहती तो ऊंची-ऊंची लहरें तट की चट्टानों पर टकराने लगतीं। लगता जैसे हजारों भयानक जीव एक साथ चीख रहे हों।

हर सुबह सेलकिर्क एक पेड़ पर चाकू से तारीख खोद देता ताकि उसे पता रहे कि निर्जन द्वीप पर आए हुए उसे कितने दिन बीत गए हैं। द्वीप पर चूहे बहुत अधिक थे। रात के समय चूहों की फौज उस पर हल्ला बोल देती। चूहे उसकी उंगलियों पर दांत गड़ाते और वह चौंककर जाग उठता। चूहों से छुटकारा पाने का उपाय बिल्लियों के रूप में मिला। सेलकिर्क गुफा में बिल्लियां पालने लगा। एक दिन ऐसा भी आया जब गुफा में और उसके आसपास सैकड़ों बिल्लियां घूमती नजर आईं। कम से कम चूहों की आफत से तो छुटकारा मिल गया था।

हर नया दिन सेलकिर्क के मन में नई आशा जगा देता। वह आशा करता कि आज कोई जहाज द्वीप की तरफ अवश्य आएगा और उसे इस निर्जन द्वीप से छुटकारा मिल जाएगा। दिन आगे खिसकते जा रहे थे। लेकिन जुआन फर्नांडीज द्वीप की तरफ कोई जहाज नहीं आया।

द्वीप पर एक ऊंचा पर्वत था। एलेक्जेंडर सेलकिर्क रोज हांफता हुआ पर्वत के शिखर पर जा चढ़ता। शिखर से नीचे दूर तक खाड़ी का दृश्य दिखाई देता था। सेलकिर्क धीरे-धीरे शिखर पर लकड़ियां जमा करता गया। वह हर रोज लकड़ियों के ढेर में आग लगा देता। काले धुएं की लकीर शिखर से उठने लगती। सेलकिर्क सोचता था कि धुएं की लकीर को समुद्र में काफी दूर जाता हुआ जहाज भी देख लेगा और इस तरह कोई न कोई उसे वहां से निकालने के लिए अवश्य आएगा। वह दिन में काफी देर तक शिखर पर खड़ा इधर-उधर देखता रहता। पर समुद्र में कोई जहाज कभी नजर न आता।

एक दिन वह गुफा में बैठा यही सोच रहा था कि शायद इसी द्वीप पर उसके प्राण निकलेंगे। एकाएक उसे ध्यान आया कि द्वीप पर आए हुए उसे चार महीने से अधिक बीत चुके हैं और उसने अपने मुंह से एक भी शब्द नहीं निकाला है। 'कहीं मैं एकांत में रहते-रहते गूंगा तो नहीं हो जाऊंगा'—यह विचार आते ही सेलकिर्क बुरी तरह डर गया और गुफा में इधर से उधर दौड़ता हुआ चीखने लगा, ''मैं एलेक्जेंडर सेलकिर्क हूं। मेरा नाम सेलकिर्क है। मैं लारगो का रहने वाला हूं।'' लंबी चौड़ी और अंधी गुफा में सेलकिर्क की आवाज की प्रतिध्वनि गूंज रही थी, 'मैं सेलकिर्क हूं...मैं...मैं...सेलकिर्क...'

निर्जन द्वीप पर कहीं कोई दूसरा मनुष्य नहीं था, इसीलिए सेलकिर्क स्वयं से ऊंची आवाज में बातें करने लगा। वह चिड़ियों के सुर में सुर मिलाकर चूं चिर्र करता, इधर-उधर दौड़ती बकरियों के पीछे उनकी आवाज की नकल करता हुआ भागता और बिल्लियों को म्याऊं-म्याऊं करके बुलाता।

इतने दिनों में सेलकिर्क का चेहरा धूप में तपकर काला पड़ गया था। सिर के बाल जटा-जूटा के समान हो गए थे। दाढ़ी-मूंछ उलझ गई थीं। नंगे पैर चट्टानों पर दौड़ते रहने के कारण तलवे पत्थर जैसे सख्त हो गए थे। अगर उसे कोई देखता तो पागल समझ बैठता।

एक दिन सेलकिर्क तट से दूर घाटी में उतर गया। वहां घना जंगल था। जंगली फल और सब्जियां बहुतायत से उग रही थीं। वह उन्हीं फल-सब्जियों को खाता और बकरियों का दूध पीता। एक दिन वह एक पहाड़ पर चढ़ रहा था—रोज की तरह समुद्र में आते-जाते जहाज को धुएं का संकेत देने के लिए। तभी उसने देखा कि एक बकरी चरती हुई एकदम चट्टान के कगार तक जा पहुंची थी। अगला कदम बकरी को नीचे घाटी में गिरा सकता था। वह बकरी को पकड़ने दौड़ा तो असावधानी से खुद उसका पैर फिसल गया। हवा में जोर की चीख गूंज उठी। सेलकिर्क बकरी को बचाने के लिए बढ़ा तो नीचे जा गिरा। फिर उसकी चेतना जाती रही।

न जाने कितनी देर तक सेलकिर्क बेहोश पड़ा रहा। होश आया तो दिन ढल रहा था। वह कमर के बल पड़ा था। ऊपर नीला आकाश दिखाई दे रहा था। सौभाग्य से सेलकिर्क नीचे गिरती बकरी के ऊपर गिरा था। चोट तो बहुत आई थी, पर अपने प्राण देकर बकरी ने उसके प्राण बचा लिए थे।

सेलकिर्क बहुत मुश्किल से लंगड़ाता, रेंगता हुआ किसी तरह अपनी गुफा तक पहुंचा। कई दिन तक वह बिना कुछ खाए गुफा में पड़ा रहा। धीरे-धीरे शरीर के घाव भर गए; हां, अब उसे लंगड़ाकर चलना पड़ता था। एक हाथ में भी पीड़ा होती रहती थी। पर जिंदा रहने के लिए संघर्ष के अलावा और उपाय भी क्या था।

आखिर एक दिन उम्मीद पूरी



हुई। एक दिन सेलकिर्क को समुद्र में दो जहाज दिखाई दिए। वह खुशी से पागल हो उठा। चीखता-चिल्लाता तट की तरफ दौड़ा—वह चीख रहा था, 'मुझे बचाओ, मैं एलेक्जेंडर सेलकिर्क हूं।' लेकिन जल्दी ही उसका उत्साह निराशा में बदल गया। असल में दोनों जहाज स्पेन के थे। उन दिनों स्पेन और इंग्लैंड के बीच घोर समुद्री युद्ध चल रहा था। अगर स्पेनी नाविकों को सेलकिर्क मिल जाता तो वे उसकी दुर्दशा करते, हो सकता है उसे गुलामों के व्यापारियों के हाथों बेच देते।

डर से थर-थर कांपता सेलकिर्क पीछे हटकर घने जंगल में जा छिपा। उसे लग रहा था कि स्पेनी नाविक उसे किसी भी क्षण आकर पकड़ लेंगे। समय पीछे खिसकता रहा। एलेक्जेंडर सेलकिर्क को अपने अकेलेपन से लड़ते हुए चार वर्ष, चार महीने बीत चुके थे। यों, वह अब भी रोज पर्वत की चोटी पर जाकर लकड़ियों में आग लगाता था। पर उसे किसी के आने की उम्मीद नहीं रह गई थी। एक बार वह पहाड़ से गिरकर बच गया था, लेकिन अब...अब उसे बस अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा थी। जंगली बकरियों, बिल्लों, चूहों और विशालकाय सीलों के बीच रहते हुए सेलकिर्क अधपगला-सा हो गया था। वह हर समय यही सोचकर बड़बड़ाता और चीख पुकार करता रहता था कि कहीं बोलना न भूल जाए।

और एक बार फिर उसने खाड़ी में एक जहाज को देखा। उसका मन आशंका से धड़क उठा। कहीं इस बार भी कोई स्पेनी जहाज न हो। वह शिखर से उतरा और पेड़ों के बीच छिपता हुआ तट के निकट गया। वहां एक ब्रिटिश जहाज खड़ा था। सेलकिर्क खुशी से चीखा और दोनों हाथ हिलाते हुए तट की ओर दौड़ पड़ा।

ब्रिटिश जलयान 'ड्यूक' के कप्तान वुड्स रोज़र्स ने आखिर एलेक्जेंडर सेलकिर्क को जुआन फर्नांडीज द्वीप की कैद से मुक्ति दिलाई। उसने अपनी पुस्तक 'ए क्रूजिंग वायेज राउंड द वर्ल्ड' में उस घटना को विस्तार से लिखा है। यह पुस्तक 1712 में छपी थी। बाद में जब सेलकिर्क 1711 में वापस इंग्लैंड पहुंचा तो रिचर्ड स्टील नामक व्यक्ति ने उससे बातचीत की। स्टील का लेख 'द इंग्लिशमैन' पत्रिका में 1713 में प्रकाशित हुआ।

फिर एलेक्जेंडर सेलकिर्क लारगो में अपने घर लौट आया, पर वह वहां अधिक समय तक नहीं रहा। मां के बिना उसे सब कुछ सूना-सूना लगता था। कुछ समय बाद सेलकिर्क दोबारा समुद्र यात्रा पर निकल पड़ा। 1721 में यात्रा करते हुए ही एलेक्जेंडर सेलकिर्क की मृत्यु हो गई। उस समय वह केवल 45 वर्ष का था।

उस समय डेनियल डेफी की पुस्तक 'राबिन्सन क्रूसो' प्रकाशित हो चुकी थी। बाद में सेलकिर्क की स्मृति में उसके घर के निकट उसकी प्रतिमा स्थापित की गई। इसमें सेलकिर्क को बकरी की खाल लपेटे हुए दिखाया गया है।

चिली सरकार ने बाद में जुआन फर्नांडीज द्वीप का नाम बदलकर 'राबिन्सन क्रूसो आइलैंड' कर दिया। उसके पास ही स्थित एक दूसरे द्वीप का नाम 'सेलकिर्क द्वीप' रख दिया गया।

हर वर्ष अनेक साहसी सैलानी दोनों द्वीपों की यात्रा पर पहुंचते हैं और उस गुफा को विशेष रूप से देखते हैं जहां एलेक्जेंडर सेलकिर्क ने अपना एकांतवास बिताया था। उन द्वीपों तक पहुंचना बहुत कठिन है। द्वीपों के पास सदा ऊंची-ऊंची लहरें उठती रहती हैं। तूफानी हवा और तेज बारिश सैलानियों का स्वागत करती हैं। द्वीप पर स्थित पर्वत की चोटी को 'सेलकिर्क लुक आउट' कहा जाता है। वहीं खड़े होकर सेलकिर्क नीचे खाड़ी की ओर देखा करता था। और वहीं लकड़ियों के ढेर में आग लगाकर धुएं से संकेत दिया करता था।

जब तक राबिन्सन क्रूसो के पाठक रहेंगे, एलेक्जेंडर की साहस कथा भी पढ़ी-सुनी जाती रहेगी। सचमुच सेलकिर्क की सत्य कथा काल्पनिक राबिन्सन क्रूसो की कथा से कहीं अधिक रोमांचक है। ❑

—प्रस्तुत : देवेन्द्र कुमार,
रमेश तैलंग

हे वृक्ष देव, तुमको प्रणाम

—डॉ. इन्द्रजीत सिंह

दूषित वायु का विष पीकर, शिव जैसा तुम करते काम।
बांट रहे आक्सीजन अमृत, बिना थके तुम आठों याम॥
हे वृक्ष देव, तुमको प्रणाम।

तुम में ब्रह्मा, तुम में विष्णु, तुम में हैं सब देव महान।
युग-युग से तुम देते आए, इस धरती को जीवन का दान॥
हे वृक्ष देव, तुमको प्रणाम।

बुद्ध तुम्हारी शरण में आए, मिला उन्हें जीवन का ज्ञान।
तुम हो ज्ञानी, तुम हो दानी, परहित का रखते हो ध्यान।
हे वृक्ष देव, तुमको प्रणाम।

सभी धर्म हैं रक्षित तुमसे, तुम रहीम, तुम ही हो राम।
धरती का शृंगार तुम्हीं हो, मीत तुम्हारे हैं घनश्याम॥
हे वृक्ष देव, तुमको प्रणाम।

सत्यं, शिवं और सुन्दरम् का देते तुम संदेश ललाम।
सबको छाया, माया देते, पाते हो जग का सम्मान॥
हे वृक्ष देव, तुमको प्रणाम।

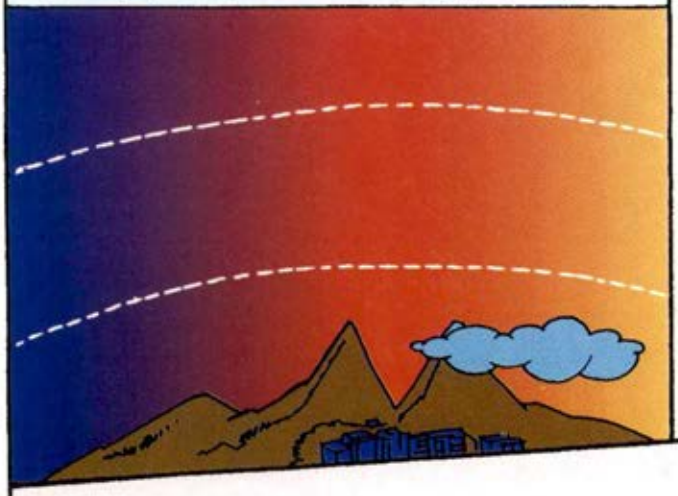
—अम्बेसी ऑफ इंडिया, (इंडियन स्कूल)
मास्को, रूस

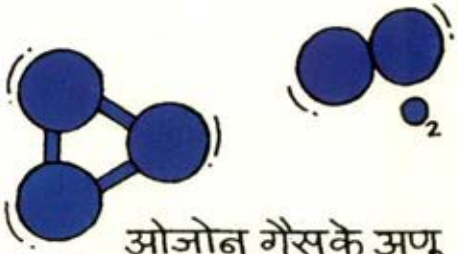
विज्ञान

ओजोन परत की सुरक्षा

प्रस्तुति - संकेत

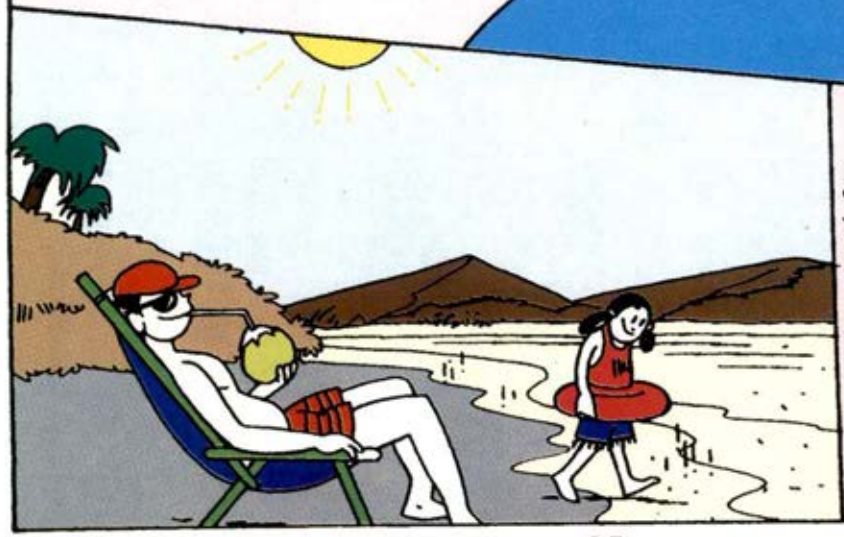
पृथ्वी से आकाश की ओर बढ़ें तो 19 से 50 किलोमीटर के बीच वायुमंडल में ओजोन गैस की एक पतली परत है -





ओजोन गैस के अणु ऑक्सीजन के तीन परमाणुओं से मिलकर बनते हैं.

ओजोन परत मानव जीवन की सबसे बड़ी साथी है. यह सूर्य से आने वाली घातक रेडियोधर्मी एवं पराबैंगनी किरणों के दुष्प्रभाव से पृथ्वी-जीवन को सुरक्षित करती है.



केवल ओजोन परत ही हानिकारक पराबैंगनी किरणों को ऊष्मा, ऊर्जा के रूप में बदल देती है. ऐसे में सूर्य-प्रकाश विकास और स्वास्थ्य-सुधार में शरीर का सहायक बनता है.

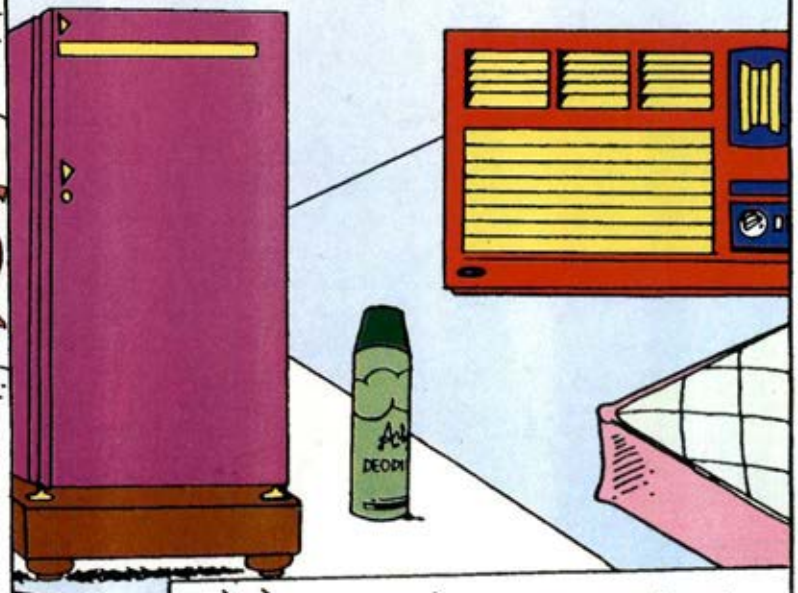
लेकिन इंसान कुछ ऐसे हानिकारक रसायनों का उपयोग करते हैं जो हवा में मिलकर ओजोन परत को नष्ट कर रहे हैं. ऐसे रसायनों को क्लोरोफ्लूरोकार्बन्स कहते हैं..

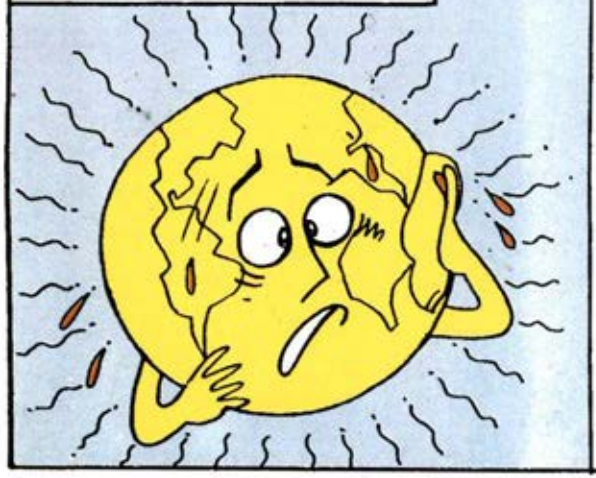


..यानी क्लोरीन, कार्बन और फ्लोरीन युक्त रसायन..



जो ओजोन परत के लिए परम शत्रु साबित हो रहे हैं.





ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायनों में ज्यादातर दैनिक जिन्दगी में इस्तेमाल में लाए जाते है. मसलन स्प्रे, कैन, एयरकंडीशन, फ्रिज, फोम निर्माण और अग्निशमन यंत्रों में इस्तेमाल में आने वाले रसायन.

पृथ्वी के पर्यावरण में गर्मी बढ़ाने में क्लोरोफ्लूरोकार्बन, कार्बन-डाइ आक्साइड के मुकाबले 25 हजार गुणा अधिक काम करता है.

इसके लिए ग्रीन-हाऊस इफेक्ट को सरल रूप में समझना पड़ेगा

धरती पर वाहनों और कारखानों के धुएं से निकली कार्बन-डाइ आक्साइड वातावरण में अपनी परत बना लेती है. जब सूर्य की ऊष्मा पृथ्वी पर आती है तो पृथ्वी ऊष्मा को वापस भेजती है, परावर्तित करती है लेकिन कार्बन-डाइ आक्साइड की परत पूरी गर्मी बाहर नहीं जाने देती. यही अम्लों के दुष्प्रभाव का कारण बनती है.

ओजोन परत न हो तो पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर पूरी विनाश-शक्ति के साथ प्रवेश तो करेंगी लेकिन वापस नहीं लौटेंगी.

ओजोन परत के कमजोर पड़ने का मतलब है सूर्य की घातक विकिरणों का पृथ्वी पर सीधे पहुंचना. ऐसे में लोगों में त्वचा कैंसर, मोतियाबिंद और आंखों के रोगों सहित प्रतिरक्षा तंत्र हनन जैसे रोगों में वृद्धि होगी.

ये तो वाकई खतरनाक होगा.



ओजोन परत पतली हो रही है और अंटार्कटिका के ऊपरी हिस्से में इसमें छेद हो चुका है। यह छेद उत्तरी अमेरिका जितना बड़ा है और माऊंट एवरेस्ट जितना गहरा.

एक बार पर्यावरण में प्रसारित क्लोरो फ्लूरो कार्बन 100 से 2300 वर्षों तक कायम रह सकते हैं.

तो बच्चो, आज अगर हम क्लोरोफ्लूरोकार्बन पैदा करने वाली चीजों के उत्पादन व उपयोग रोकें तो 50 से 100 वर्षों में हम ओजोन परत को पहुंचे नुकसान से मुक्त होंगे.

वरना जल्द ही बढ़ती गर्मी से ध्रुवों की बर्फ पिघलेगी, समुद्र तल ऊपर उठेगा और महाद्वीपों को डुबो डालेगा. हॉलैण्ड और मालद्वीप जैसे द्वीप तो बहुत जल्दी पानी में डूब जाएंगे...





ओजोन परत संरक्षण की दिशा में हुए समझौते पर विश्व के 173 देश हस्ताक्षर कर चुके हैं. 2020 तक क्लोरोफ्लूरोकार्बन्स पदार्थों के प्रयोग पर 99.5% रोक लगाने की उम्मीद है.

समाप्त

माली काका का उपहार

—प्रतुल गुप्ता

मीना के पापा वकील थे और मम्मी एक स्कूल में अध्यापिका थी। मीना अपने मम्मी-पापा की इकलौती बेटी थी। मम्मी-पापा, दोनों ही उसका बहुत ध्यान रखते थे और उसकी हर छोटी-बड़ी इच्छा पूरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। शहर के एक अच्छे स्कूल में वह चौथी कक्षा में पढ़ती थी। सुबह मम्मी-पापा और मीना इकट्ठे ही घर से निकलते थे, पर दोपहर में मीना की छुट्टी दो घंटे पहले हो जाती थी। वह मम्मी से पहले ही घर पहुंच जाती थी।

यों तो मीना की देख-रेख के लिए घर में आया थी, पर मीना के ये दो घंटे अधिकतर माली काका के साथ बीतते थे। मीना के घर के सामने एक बहुत बड़ा पार्क था। माली काका उसी पार्क की देखभाल करते थे। समय निकालकर वे मीना के घर में रखे गमलों की भी देखभाल कर दिया करते थे।

मीना को माली काका से बातें करना बहुत अच्छा लगता था। उसे तब तक चैन नहीं पड़ता था जब तक वह स्कूल में घटी छोटी से छोटी बात माली काका को नहीं बतला देती थी। माली काका भी मीना की भोली-भाली बातों में खो जाते थे। मीना को पार्क में झूला झूलना और फिसलन पट्टी पर फिसलना भी खूब पसन्द था। पार्क में मीना को सबसे अच्छा लगता





था रंग-बिरंगी तितलियों के पीछे दौड़ना।

एक दिन मीना दौड़ी-दौड़ी माली काका के पास पहुंची। उस दिन वह बहुत खुश नजर आ रही थी। उसने गुलाबी रंग की सुन्दर फ्रॉक और उसी रंग के जूते पहन रखे थे। सिर पर गुलाबी ही स्कार्फ बंधा था। वह किसी परी से कम नहीं लग रही थी।

एक बार तो माली काका को भी यही लगा कि उनके पार्क में परी लोक से कोई नन्हीं परी उतर आई है, पर जब उन्होंने आंख उठाकर उसके चेहरे की ओर देखा तो बोले, "अरे! यह तो मीना बिटिया है। हमने तो सोचा था आज कोई परी आ गई है इस पार्क में।"

यह सुनकर मीना शरमा गई, पर मन ही मन वह बड़ी खुश थी। माली काका ने आगे बढ़कर उसे गोद में उठा लिया।

"आपको मालूम है, आज मेरी परीक्षा का नतीजा निकला है और मैं अपनी कक्षा में पहले स्थान पर रही हूं," मीना ने कहा तो माली काका खुश होते हुए बोले,

"भगवान तुम्हें लंबी उम्र दे बेटी और तुम बड़ी होकर खूब नाम कमाओ, मेरी उम्र भी तुम्हें लग जाए।"

"नहीं-नहीं, मुझे आपकी उम्र नहीं चाहिए। मुझे तो कोई उपहार चाहिए," मचलते हुए मीना बोली।

"उपहार..."

"हां, काका! आज मुझे एक उपहार चाहिए।"

मीना की बात सुनकर माली काका सोच में पड़ गए।

"मेरे पास तो इसे देने को कुछ भी नहीं है। मैं इसे क्या दूं?"

तभी एकाएक उन्हें कुछ ध्यान आया और खुश होते हुए वे बोले, "बिटिया! आज मैं तुम्हें ऐसा उपहार देना चाहता हूं जो सदा तुम्हारे पास रहे, पर तुम्हें थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

इतना कहकर माली काका पार्क में बनी नर्सरी में से एक आम की पौध ले आए और मीना से बोले, "बिटिया! तुम्हारे माली काका की ओर से तुम्हारी सफलता पर यही उपहार है। चलो, इसे तुम्हारे आंगन में लगा दूं।"

मीना ने माली काका के हाथ में से वह आम का नन्हा सा पौधा ले लिया और उनके साथ अपने घर आ गई। काका ने आंगन में एक ओर एक गड्ढा खोदा। मीना ने गड्ढे में उस नन्हें पौधे को रख दिया। माली काका ने आस-पास अच्छी तरह मिट्टी जमा दी। इस बीच मीना मग में थोड़ा-सा पानी ले आई और पौधे को सींच दिया।

"बेटी! मैं बूढ़ा हो गया हूं, पता नहीं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, पर यह आम का पौधा एक दिन बड़ा पेड़ बन जाएगा तब इस पर बहुत से आम लगेंगे। आमों को तुम खाना भी और इसकी छाया में बैठकर खूब मन लगाकर पढ़ना भी। आम के पेड़ को फलते-फूलते देख कर तुम्हें मेरी याद आएगी," भरे गले से माली काका बोले।

"आप ऐसा क्यों कहते हैं काका? यह पेड़ जल्दी ही बड़ा हो जाएगा। मैं इसकी अच्छी देखभाल करूंगी। जब इसमें आम लगेंगे तब मैं आपके साथ मिलकर उन आमों को खाऊंगी," अपने हाथ माली काका के गले में डालते हुए मीना बोली।

"बिटिया! ये पेड़ हमारे सच्चे दोस्त हैं। ये हमें फल और छाया ही नहीं देते बल्कि हवा को भी साफ करते हैं।"

माली काका बोल रहे थे और मीना ध्यान से उनकी बातें सुन रही थी। वह कक्षा में प्रथम आने पर इस अनोखे उपहार को पाकर बेहद खुश थी।

मीना ने इस सुन्दर उपहार के लिए माली काका को धन्यवाद दिया और मन ही मन निश्चय किया कि वह उस उपहार का अच्छी तरह ध्यान रखेगी। ❑

—554-ए, तलवण्डी,
कोटा-324005 (राजस्थान)

(पृष्ठ 17 का शेष)

सभी खिलाड़ियों ने चलाई। पर जब टूट-फूट गई तो उसे बेचने पर जो भी रुपए मिले वह भी मैंने तुम्हारे हवाले कर दिए। अब तुम्हें किस बात का अफसोस है।"

कबड्डी टीम का कप्तान रोशन सिंह लंबी सांस भरकर बोला, "अफसोस मुझे किस बात का होगा जबकि मैच जीतने की खुशी में इनाम की साइकिल कबाड़ी के हाथों बेचकर तुमने पूरी रकम मेरे हाथों में जो सौंप दी है।"

खिलाड़ी ने रोशन सिंह का उत्तर सुनकर सिर नीचे झुका लिया। आज उसे महसूस हुआ कि रोशन सिंह के साथ पूरी टीम ने बहुत बड़ा अन्याय किया था। ❑

—एफ-ई 7, नया कविनगर
गाजियाबाद-201002 (उ.प्र.)



छुट्टियों की मस्ती और हम

छुट्टियों का अपना ही मजा है लेकिन गर्मी की लंबी छुट्टियों का तो कहना ही क्या! सभी बच्चों को इन छुट्टियों का बेसब्री से इंतजार रहता है क्योंकि परीक्षाएं हो चुकी होती हैं—कुछ बच्चे नई कक्षा में पहुंच चुके होते हैं और कुछ को बोर्ड के परीक्षा परिणाम का इंतजार रहता है—ऐसे में स्कूल और अध्यापकों से दूर रहकर अपना मनचाहा बहुत-कुछ करने का उन्हें समय मिल जाता है। छुट्टियों में कोई सैर-सपाटे का कार्यक्रम बनाता है तो कोई दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-ताऊ-बुआ-मौसी के पास कुछ दिन रहकर मौज-मस्ती करना चाहता है। छुट्टियों को अपने-अपने ढंग से बिताने के खयालों में खोए बच्चों से बातें करके हमें बहुत मजा आया। कुछ बच्चों ने हमें पिछली छुट्टियों के अपने मजेदार अनुभव सुनाए तो कुछ ने बताया कि इस साल छुट्टियों में वे क्या-क्या करेंगे। बच्चों की बातें, उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत हैं।

अच्छा लगता है छुट्टियों में घूमना

—सृष्टि भटनागर



मुझे छुट्टियां बहुत अच्छी लगती हैं। पिछले वर्ष गर्मियों की छुट्टी में हम अपने मामा के घर बंगलौर गए थे। वहां बहुत हरियाली है। सुबह ठंडी-ठंडी हवा चलती है और शाम को वर्षा होती है। हम लोग खूब खेलते थे। हम प्रतिदिन निकट के पार्क में जाया करते थे। दिन में नाश्ते के बाद कैरम, चेस, लूडो इत्यादि खेलते थे। मैंने वहां की कन्नड़ भाषा भी थोड़ी-बहुत सीखी। कुछ दिनों के बाद पापा हमें अपने मित्र के यहां चेन्नई ले आए। हमने प्रसिद्ध त्रिरुपति मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन भी किए। वहां हम कुछ दिन और रुककर दिल्ली लौट आए।

मैं बंगलौर के बाद स्कूल की तरफ से अपने दोस्तों के साथ पांच दिनों के लिए शिमला के ट्रिप पर गई थी। दोस्तों के साथ रहने में बहुत मजा आता था। सब साथ-साथ खाना खाते, गाना गाते, नाचते और चुटकुले सुनाते थे। मुझे वो दिन अब भी याद आते हैं।

इस साल गर्मी की छुट्टियों में हम स्विट्जरलैंड जाएंगे। हम पहली बार हवाई जहाज में बैठेंगे। कितना मजा आएगा! बाकी सारी बातें स्विट्जरलैंड से आने पर आपको बताऊंगी।

पिछली छुट्टियों की यादें

—उत्कर्ष



छुट्टियों की बात पर मुझे पिछली गर्मी की छुट्टियां कभी नहीं भूलेंगी। पिछले वर्ष गर्मी की छुट्टी में पटना से मेरे अंकल-आंटी और उनकी बेटी समन्विता शैली, सनद भैया भी आए थे। हम लोग साथ-साथ आगरा, मथुरा-वृंदावन घूमने गए थे। आगरा में हमने बहुत-सी चीजें देखी थीं। ताजमहल के विषय में कोर्स की किताब में जरूर पढ़ा था लेकिन उसे इतने करीब से देखने का पहला अवसर था। उसके बाद हम लोग फतेहपुर सीकरी की ओर चल दिए। वहां हमने सलीम चिश्ती की दरगाह देखी, बुलंद दरवाजा देखा। कहते हैं यह दरवाजा दुनिया में सबसे बड़ा है। वापसी में हम लोग भगवान कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा गए। वहां हमने वह स्थान देखा जहां कृष्ण जन्मे थे। कहते हैं कि पहले यहां कंस का कैदखाना था। मंदिर परिसर से बाहर निकलकर हम लोगों ने लस्सी पी। माटी के बर्तन में वह लस्सी सचमुच बड़ी मजेदार थी।

इस साल छुट्टियों में हम लोग गांव जाएंगे। वहां एक शादी में हमें शामिल होना है।

पहाड़ों पर घूमने का मजा

—शिवांगिनी लोहनी



हर वर्ष गर्मी की छुट्टियां आते ही हम लोग दिल्ली से बाहर पहाड़ों पर घूमने जाने का कार्यक्रम बनाते हैं। पिछले वर्ष की छुट्टियों में मैं अपने पापा-मम्मी के साथ जागेश्वर गई थी। जागेश्वर अल्मोड़ा से 38 कि.मी. दूर है। 24 मंदिरों से बना यह कॉम्प्लेक्स देवदार के घने पेड़ों की छाया से घिरा है। यहां एक म्यूजियम भी है। यहां का मौसम बड़ा ठंडा है। हम लोग यहां दो दिन रहे। हमने पाताल भुवनेश्वर मंदिर की गुफा भी देखी। उसके बाद हम चौकड़ी गए। यहां पर सीढ़ीदार क्यारियों में चाय उगाई जाती है। फिर हम मुन्सियारी गए। रास्ते में हमने झरने देखे। हम उसमें नहाए भी। यहां रामगंगा और गौरी नदियों में साफ पानी मिलता है। इस वर्ष भी शायद केदारनाथ घूमने जाऊं।

अभी तक कुछ तय नहीं किया

—मानस



मैंने अभी तक कुछ तय नहीं किया। मगर मैं गर्मी की छुट्टियों में ऋषिकेश या फिर मुम्बई जाऊंगा। मैं पहले भी ऋषिकेश में रामझूला गया था। वहां मैंने मछलियों को खाना भी खिलाया था। मुम्बई में भी मैंने एस्सेल वर्ल्ड और वाटर किंगडम पहले से देखा हुआ है। काश, मैं दोनों जगह फिर से जा सकूं। वैसे छुट्टियों में अपने कम्प्यूटर पर गेम तो खेलूंगा ही। मेरी मम्मी ने कहा है कि वो मुझे संगीत सिखाएंगी इसलिए छुट्टियों में संगीत सीखूंगा।

धूमधाम से मनाऊंगा छुट्टियां

—अतुल पंत



मैं अपनी गर्मियों की छुट्टियां धूमधाम से मनाऊंगा। शायद मैं घूमने जाऊं अपने गांव। मेरा गांव एकदम हरा-भरा है। अगर मैं उधर नहीं गया तो क्या हुआ, कहीं और घूमने चला जाऊंगा। लेकिन मैं घूमने नहीं भी गया तो क्या हुआ। मैं घर में बैठकर अच्छी-अच्छी ड्राइंग बनाऊंगा या फिर डिस्कवरी चैनल देखूंगा। और...हमारा अपना चकमक क्लब भी तो है हमारी सोसायटी में। मेरे दोस्त शिवांक, हार्दिक, एल्विन, ईशान, राहुल, अरुण, अच्चू, सुब्रो, ऋतिका, मानस— हम सब वहां जाकर मजेदार कहानियों की किताबें पढ़ेंगे और छुट्टियों की मजेदार बातें भी लिखेंगे। मैं गर्मियों की छुट्टी में डबल मजा करूंगा। जब टी.वी. पर अच्छी-अच्छी पिक्चर आएगी, मैं पॉपकॉर्न खाते हुए देखूंगा टी.वी.। अगर मैं गांव जाऊंगा तो छुट्टियों का काम साथ लेकर जाऊंगा। अरे, 'होमवर्क' भी तो पूरा करना है।

छुट्टियों में ड्राइंग कोर्स करूंगी

—पारुल सिन्हा

लंबे इंतजार के बाद गर्मी की छुट्टियां आ रही हैं। सभी बच्चों की तरह हम दोनों भाई-बहन भी छुट्टियों के लिए उत्साहित हैं और कहीं घूमने जाने की योजना बना रहे हैं। मुझे ऐतिहासिक जगहों पर घूमना अच्छा लगता है। जैसे दिल्ली, जयपुर, बिहार। दिल्ली की सारी ऐतिहासिक जगहें मैं देख चुकी हूं। इस छुट्टी में हम जयपुर जाने की सोच रहे हैं। इसके

अलावा हम अपने चाचा-चाची के घर बंगलौर भी जाएंगे। हां, इस बार गर्मी की छुट्टियों में ड्राइंगकोर्स जरूर करूंगी क्योंकि मुझे ड्राइंग बनाना बहुत अच्छा लगता है। गर्मी की छुट्टियों के बाद तुरंत टेस्ट शुरू हो जाते हैं। इसलिए छुट्टियों में पढ़ना भी पड़ता है।



प्रकृति का आनंद लूंगी

—गीता शर्मा



इस बार गर्मी की छुट्टियां मैं अपने गांव उत्तरांचल में जाकर बिताऊंगी। वहां मैं पर्वतारोहण का आनंद उठाऊंगी जो कि मेरा प्रिय शौक है। इसके साथ-साथ प्रकृति का आनंद भी लूंगी। मैं वहां के लोगों को प्रकृति, वन्य जीवन के महत्व एवं संरक्षण के प्रति जागरूक भी करूंगी क्योंकि यह विषय देश के लिए ही नहीं, मानव जाति के लिए भी महत्व रखता है। वैसे सच कहूं तो पर्यावरण संरक्षण में मेरी विशेष रुचि है इसलिए यह काम मेरी रुचि के अनुकूल है।

पहले लखनऊ फिर आयोध्या जाऊंगी

—अंकिता तिवारी

मेरे डैडी कहते हैं कि तुम लखनऊ जाओ। लखनऊ में मेरे चाचा-चाची और उनके तीन पढ़ाकू-शैतान बच्चे रहते हैं। वहां पर हम सुबह पार्क में खेलने जाएंगे, दोपहर को पढ़ेंगे और शाम को मार्किट घूमेंगे और मनपसंद चीजें खाएंगे।

पहले तो मेरा मन था कि मैं शिमला जाऊं फिर डैडी ने डांटा कि तुम्हें तो बस घूमना ही घूमना है। मैंने सोचा चलो कोई बात नहीं, नाना के घर चलते हैं। तब तो और डांटा। बोले कि तुम्हें कहीं नहीं जाना, सिवाय नन्हे चाचा के। मेरे नन्हे चाचा लखनऊ में रहते हैं। वे बच्चों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान देते हैं। इसलिए वहां पर मैं अपनी पढ़ाई भी कर लूंगी और लखनऊ भी घूम लूंगी। अंत में मौका मिला तो अयोध्या यानी अपने दादा के घर जाऊंगी और सरयू नदी में नहाकर भी जरूरी आऊंगी।



क्रिकेट खेलने जाऊंगा नैनीताल

—जिबिन जार्ज



हर वर्ष की तरह इस बार मैं गर्मी की छुट्टियों में केरल न जाकर नैनीताल जा रहा हूं। वास्तव में वहां एक सर्वभारत क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा है। यह एक हफ्ते के लिए है जिसमें मैं भी भाग ले रहा हूं। इसके अलावा इन छुट्टियों में मेरा दसवीं का परीक्षा परिणाम भी आना है। इसलिए थोड़ा उतावला भी हूं। इन छुट्टियों में मैं कम्प्यूटर की कक्षाएं भी ज्वाइन करूंगा। मेरे कुछ दोस्त गांव जा रहे हैं, मैं चाहता हूं कि उनके आने तक अपनी सोसायटी में एक बैडमिंटन कोर्ट बना दूं जिसे देखकर वे आश्चर्यचकित रह जाएंगे।

घूमूंगी और तैरना सीखूंगी

—अंजना

इस बार मैं छुट्टियों में बंगलौर, केरल और तमिलनाडु घूमने जा रही हूं। वहां मेरे मामा-मामी, नाना-नानी, दादा-दादी, बुआ, चाची और सभी कज़न्स रहते हैं। मैं वहां कई बार जा चुकी हूं पर इस बार हमने



सोचा है कि सभी ऐतिहासिक स्थल हम देखेंगे जो कि हम हर बार नहीं देख पाते हैं। केरल घूमने का सबसे अच्छा समय मई-जून है। केरल में काफी हरियाली है और वहां के प्राकृतिक दृश्यों को मैं सबसे ज्यादा 'इंजॉय' करती हूं। वहां पर कई मंदिर हैं। कर्नाटक के हम्पी ग्रुप ऑफ टेम्पल्स मुझे बहुत पसंद हैं। हमारे घर के आसपास 'वाटरफॉल' भी हैं। ये सब जगहें घूमने के अलावा मैं तैरना सीखूंगी और बहुत-सी पेंटिंग्स बनाऊंगी। मैं दोस्तोवस्की की 'क्राइम एंड पनिशमेंट', टालस्टॉय की 'वार एंड पीस' और सलमान रुश्दी की कुछ किताबें जरूर पढ़ूंगी। मैं अपनी दादी के घर में पाली हुई बिल्लियों और गायों के साथ भी समय बिताऊंगी।

मेरा ज्यादा ध्यान पढ़ाई पर रहेगा

—सार्थक शुक्ला



मैं अब दसवीं कक्षा में आ गया हूं और यह साल मेरे लिए बहुत खास है। इस बार मैं अपनी बोर्ड की परीक्षा दूंगा। इस कारण मुझे नहीं लगता कि मैं गर्मियों की छुट्टियों में कहीं बाहर घूमने के लिए जा सकूंगा। हालांकि अभी तक हमारे घर में तय यह हुआ है कि मैं छुट्टियों में दिल्ली की ही कुछ खास जगहों पर अपने माता-पिता और छोटे भाई उत्सव के साथ जाऊंगा। मेरे डैडी ने वादा किया है कि वे हमें इस साल फन एंड फूड विलेज, कुतुब मीनार और रेल संग्रहालय तो जरूर लेकर जाएंगे। अगर मेरी दादी की सेहत ठीक रही तो वे भी हमारे साथ जाएंगी। इसके अलावा मेरा ज्यादा ध्यान अपनी पढ़ाई पर ही रहेगा। दिल्ली से बाहर जाने का तो कोई इरादा नहीं है। इस सबके अलावा, मेरी मम्मी ने हम दोनों भाइयों से वादा किया है कि वे हमें कई फिल्मों की सीडी भी दिलवाएंगी। हो सकता है कि हम कुछेक दिन के लिए अपने ताऊ जी और मामू के घर भी जाएं। पर वे भी दोनों दिल्ली में ही रहते हैं, इसलिए हमारा दिल्ली से बाहर जाने का कोई कार्यक्रम बनता नहीं दिखता। बहरहाल, मैं छुट्टियों में भी जिम जाने का वक्त निकाल लूंगा।

गांव में बिताऊंगी छुट्टियां

—माधवी



परीक्षाओं के बाद मौसम आता है गर्मी की छुट्टियों का। ये छुट्टियां अपने साथ लेकर आती हैं ढेर सारी मौज-मस्ती। हमारे सिर से पढ़ाई का टेंशन दूर हो जाता है। इस बार मैं अपनी पूरी छुट्टियां गांव में ही बिताऊंगी। मेरा गांव पटना में है। यहां आकर मैं अपने पुराने दोस्तों और परिवार के साथ यहां की प्रसिद्ध जगहों जैसे गोलघर, चिड़ियाघर, म्यूजियम, तारामंडल, विज्ञान केंद्र, गांधी मैदान आदि को फिर से देखूंगी। अपने दोस्तों के साथ मैं क्रिकेट, कैरम, बैडमिंटन, लूडो, पिट्ठू आदि गेम्स खेलूंगी। लेकिन खेलने के साथ हमें थोड़ी-बहुत पढ़ाई भी करनी चाहिए। इसलिए इन छुट्टियों में मैं एक महीने कम्प्यूटर सीखूंगी। घर के कामों में थोड़ा-बहुत अपनी मम्मी की मदद के अलावा मैं कहानियां पढ़ने के शौक को भी पूरा करूंगी। मुझे ड्राइंग बनाना भी पसंद है। खाली समय में मैं ड्राइंग बनाने का काम करूंगी। इन सबके अतिरिक्त मैं अपनी सबसे छोटी बहन जो अभी पहली कक्षा में है, उसको पढ़ाऊंगी और उसके साथ खेलूंगी। इस तरह थोड़ी पढ़ाई, थोड़ी मस्ती के साथ बीतेंगी गर्मी की छुट्टियां।

—प्रस्तुति : शिप्रा सिंह

हिम के पौधे यहां उगाएं

—अशोक जैन

क्यों न धूप खेत में उगती,
क्यों न ठंड पेड़ पर लगती।

गर पेड़ पर ठंडक लगती,
धूप खेत में यदि उग आती,
तो गर्मी में ठंड लगाते,
सर्दी में हम धूप उगाते।

ओ भैया सूरज जी हमको,
बीज धूप के थोड़े दे दो,
औ भैया हिम पर्वत अपने,
बीज ठंड के थोड़े दे दो।

बीज धूप के यदि मिल जाएं,
धरती पर हम सूरज लाएं,
बीज ठंड के यदि पा जाएं
हिम के पौधे यहां उगाएं।

—श्रीश्रीमाल भवन,
बंदा रोड
भवानी मंडी-
326502
(राज.)



गर्मी की दोपहरी में

—सुरेश विमल

जाने क्या-क्या करती गुड़िया
गर्मी की दोपहरी में!

इस कमरे से उस कमरे तक
दौड़ लगाती, हंसती-गाती,
अपनी प्यारी-सी गुड़िया का
गुड़िया शायद ब्याह रचाती।

चित्रों में रंग भरती गुड़िया
गर्मी की दोपहरी में!

दादी मां बनकर खुद को ही
लगी सुनाने परी कथाएं,
आंगन में बैठी गौरैया
सुनती जैसे कान लगाए।

सन्नाटे से लड़ती गुड़िया
गर्मी की दोपहरी में!

—'श्री भागवत-सदन'
टोड़ाभीम-321611 (राजस्थान)



एलपीजी और प्रेशर कुकर का झमेला

—डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

सभी बच्चे आ गए थे। अनन्य कुलश्रेष्ठ बस श्वेता के आने का ही इंतजार कर रहे थे कि वह आए और वह विज्ञान गोष्ठी को शुरू करें। बच्चों को अधीर होते देखकर अनन्य कुलश्रेष्ठ बोले, ''कोई न कोई बात हो गई होगी जो श्वेता नहीं...।'' उन्होंने अपना वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि श्वेता आ पहुंची। बोली, ''माफ करना अंकल, मुझे आने में देर हो गई। मैं गोष्ठी के लिए निकल ही रही थी कि अचानक रसोई में गैस खत्म हो गई। तभी मम्मी जी के कहने पर मुझे नया सिलिंडर लगाना पड़ा। उसी में कुछ वक्त लग गया।''

सुनकर अंकल खुश होते हुए बोले, ''वाह, श्वेता। तुम सिलिंडर बदल लेती हो, यह तो बड़ी अच्छी बात है। पर क्या तुम्हें सिलिंडर में भरी जाने वाली गैस के बारे में भी कुछ जानकारी है।''

श्वेता बोली, ''हां, अंकल! सिलिंडर में भरी जाने वाली गैस को एलपीजी कहते हैं।''

अंकल बोले, ''तुमने ठीक बताया श्वेता। खाना पकाने के काम में आने वाली गैस को एलपीजी यानी लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस कहते हैं। यह गैस द्रव अवस्था में होती है, तभी इसे द्रवित यानी लिक्विफाइड कहते हैं।''

सिद्धार्थ ने पूछा, ''अंकल, यह गैस हमें कैसे प्राप्त होती है?''

अंकल ने बताया, ''क्रूड पेट्रोलियम से ही हमें एलपीजी प्राप्त होती है। कच्चे पेट्रोलियम से हमें पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल आदि विविध उत्पादों के साथ पेट्रोलियम गैस भी प्राप्त होती है। इसमें मुख्य रूप से ब्यूटेन नामक हाइड्रोकार्बन



गैस होती है हालांकि इस गैसीय मिश्रण में ईथेन, प्रोपेन आदि भी मौजूद होते हैं। यही गैस एलपीजी कहलाती है। एलपीजी के एक ग्राम से हमें करीब 50,000 कैलोरी की ऊर्जा प्राप्त होती है। यह गैस रंगहीन, गंधहीन और आसानी से ज्वलनशील होती है। गैस को उच्च दबाव पर सिलिंडरों में भरा जाता है जिससे कि यह द्रव अवस्था में आ जाती है। गैस के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए हर सिलिंडर के साथ एक रेग्युलेटर लगा होता है।''

जया ने पूछा, ''अंकल, आपने बताया कि एलपीजी गंधहीन होती है। लेकिन पापा ने बताया था कि जब बंद सिलिंडर से गैस की गंध आए तो समझ लेना चाहिए कि सिलिंडर से गैस का रिसाव हो रहा है।''

अंकल बोले, ''जया, तुम्हारे पापा ने ठीक ही बताया था। दरअसल, एलपीजी स्वयं तो गंधहीन होती है लेकिन इसमें इथाइल मरकैप्टन की थोड़ी मात्रा मिला दी जाती है ताकि रिसाव की स्थिति में गैस बाहर निकलने पर गंध से उसका पता लगाया जा सके। यह गंध इथाइल मरकैप्टन के कारण ही होती है।''

राजन बोला, ''अंकल, रिसाव होने पर खिड़कियां खोल देने को तथा बिजली के स्विचों पर हाथ न लगाने के लिए कहा जाता है। मोमबत्ती या माचिस की तीली आदि जलाने के लिए भी मना किया जाता है। खिड़कियां खोलने की बात तो समझ में आती है क्योंकि इससे गैस को बाहर निकलने का मौका मिलता है। लेकिन, आखिर बिजली के स्विचों को छूने और लौ जलाने से क्यों मना किया जाता है अंकल?''

अंकल ने जवाब दिया, ''राजन बिजली के स्विच को ऑन या ऑफ करने पर उसमें से हल्की-सी चिंगारी निकलती है जिससे एलपीजी में आग लग सकती है क्योंकि यह गैस आसानी से ज्वलनशील होती है। मोमबत्ती या माचिस की तीली न जलाने के पीछे भी यही कारण है।''

ख्याति बोली, ''अंकल, हमारे घर में एक बार गैस के सिलिंडर में रिसाव हुआ था। तब मैकेनिक अंकल ने आकर साबुन का घोल बनाकर जांच की थी। मैकेनिक अंकल ने साबुन के घोल का क्यों इस्तेमाल किया था और उससे रिसाव का उन्होंने कैसे पता लगाया अंकल?''

सुनकर मुस्करा दिए अंकल। फिर बोले, ''ख्याति, तुमने बड़ा ही अच्छा सवाल पूछा है। दरअसल, हर घर में साबुन तो होता ही है, इसलिए साबुन का घोल आसानी से बन जाता है। जब सिलिंडर पर इस घोल को लगाया जाता है तो रिसाव वाली जगह से नन्हें-नन्हें बुलबुले फूटते साफ दिखाई पड़ते हैं। इससे रिसाव का पता आसानी से चल जाता है। साबुन का घोल एकदम सुरक्षित भी होता है क्योंकि यह प्रज्वलनशील नहीं होता है। अत: रिसाव का पता लगाने में साबुन के घोल को एक सुरक्षित, आसानी से उपलब्ध होने वाला तथा एक भरोसेमंद उपाय माना जाता है।''

श्वेता बोली, ''घर में मम्मी जी कहा करती हैं कि कुछ सरल उपायों का पालन करके एलपीजी में काफी बचत की जा सकती है। वे कौन से उपाय हैं, अंकल?''

अंकल ने बताया, ''श्वेता पीसीआरए यानी पेट्रोलियम कंजर्वेशन रिसर्च एसोसिएशन ने इसके लिए कुछ सरल उपाय सुझाए हैं जिनका पालन करके कीमती ईंधन में बचत की जा सकती है। खाना पकाने से पहले पकाने की सभी सामग्री तैयार रखनी चाहिए। अनाजों, जैसे दाल, चावल आदि को पकाने से पहले कुछ निश्चित समय के लिए पानी में भिगोकर रखना चाहिए। परीक्षण द्वारा यह पाया गया है कि रात भर पानी में भिगोकर रखे हुए काबुली चनों को पकाने में बिना भिगोए हुए काबुली चनों की तुलना में 22 प्रतिशत कम ईंधन खर्च होता



है। खाना पकाने के लिए सही मात्रा में पानी का प्रयोग करना चाहिए। चावल पकाने के एक प्रयोग से पता चला है कि आवश्यक मात्रा से दोगुने पानी का इस्तेमाल करने पर ईंधन की खपत 65 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। ईंधन की बर्बादी के अलावा ज्यादा पानी के प्रयोग से भोजन से लाभकारी पोषक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं। बर्तन या पतीले में रखे पदार्थ जब उबलने लगें तो आंच धीमी कर देनी चाहिए। प्रयोगों से पता चला है कि उबाल आने पर लौ धीमी करने से 35 प्रतिशत तक ईंधन की बचत होती है। हमेशा चौड़े बर्तनों, पतीलों आदि का ही इस्तेमाल करना चाहिए। संकरे बर्तनों से लौ बाहर निकल जाने के कारण ईंधन की नाहक बर्बादी होती है। खाना पकाते समय बर्तनों और कढ़ाही आदि को ढक देने से भी ईंधन की बचत होती है। प्रेशर कुकर में पकाने से तो ईंधन और समय दोनों की ही बचत होती है। प्रयोगों से पता चला है कि साधारण तरीके से खाना पकाने की तुलना में प्रेशर कुकर पर चावल पकाने से चावल पर 20 प्रतिशत, भीगे चने की दाल पर 46 प्रतिशत तथा मांस पर 41.5 प्रतिशत ईंधन की बचत होती है। इसलिए कोशिश यही करनी चाहिए कि खाना प्रेशर कुकर में ही पकाया जाए। तुम लोगों ने गौर किया होगा कि गैस के स्टोव में एक बड़ा और एक छोटा बर्नर होता है। छोटे बर्नर में बड़े बर्नर की तुलना में 6 से 10 प्रतिशत तक कम गैस की खपत होती है हालांकि इसमें समय कुछ ज्यादा लगता है। इसलिए जब समय हाथ में हो तो छोटे बर्नर का ही इस्तेमाल करना चाहिए।''

सभी बच्चे ध्यान से अनन्य अंकल की बातों को सुन रहे थे। जया ने पूछा, ''आखिर, प्रेशर कुकर में खाना जल्दी क्यों पकता है अंकल?''

जवाब में अंकल बोले, ''तुम्हारे प्रश्न का भी उत्तर देता हूं जया! पर पहले यह बताओ कि प्रेशर कुकर का आविष्कार किसने किया था?''

सुनकर जया चुप रही, बाकी बच्चों में से भी किसी ने अपना मुंह नहीं खोला। अनन्य कुलश्रेष्ठ समझ गए कि इसका जवाब उन्हें ही देना होगा। बोले, ''क्यों, नहीं पता न तुम

लोगों को इसका उत्तर? तो सुनो, प्रेशर कुकर का आविष्कार **डेनिस पेपिन** नाम के एक फ्रांसिसी ने किया था। असल में डेनिस एक चिकित्सक थे, पर बाद में वह भौतिक विज्ञान की ओर आकर्षित हुए। अपनी ईजाद का नाम डेनिस ने डाइजेस्टर रखा। मांस निकालने के बाद बची हुई हड्डियों को डाइजेस्टर में पका कर उन्होंने इन हड्डियों को एक मुलायम जेली के रूप में बदल दिया। इसका प्रदर्शन उन्होंने लंदन की रॉयल सोसाइटी के वैज्ञानिकों के सामने किया। अब तुम लोगों को यह बताता हूं कि प्रेशर कुकर में खाना जल्दी क्यों पकता है। तुम्हें पता ही है कि साधारण वायुमंडलीय दाब पर पानी 100 डिग्री सेल्सियस तापमान पर उबलता है। इस तापमान को पानी का क्वथनांक यानी ब्वालिंग पाइंट कहते हैं। पर दाब बढ़ा देने से पानी के खौलने का तापमान या क्वथनांक बढ़ जाता है जिससे पानी 100 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक तापमान पर उबलता है। प्रेशर कुकर में इसी सिद्धांत का इस्तेमाल किया जाता है। इससे पकाए जाने वाले भोजन को अधिक ऊष्मा मिलती है। नतीजतन खाना तो जल्दी पकता ही है, उसका स्वाद भी बढ़ जाता है।''

कहकर रुक गए अनन्य अंकल। फिर बोले, ''अब तुम लोग अपने-अपने घर जाओ और जो कुछ तुम लोगों ने आज सीखा उसे अपने घरवालों और मोहल्ले वालों को जाकर बताओ। आखिर, विज्ञान जागरूकता की मशाल को जलाने का काम तुम लोगों ने ही तो करना है।'' ❑

—43, देशबंधु सोसाइटी,
15, पटपड़गंज दिल्ली-110092

शीर्षक बताओ प्रतियोगिता

(जून 2005)

नाम ..... आयु .....

पता .....

.....

शीर्षक .....

.....

पर्यावरण

विज्ञान मंच

—रंजन कुमार अमृतनिधि

1. वृक्ष विथि बनाने का आदेश देने वाला विश्व का प्रथम सम्राट कौन था?
2. वह कौन-सा प्राणी है, जो कुत्ते की तरह भौंकता और उल्लू की तरह चीखता है?
3. कौन-सा जीव अपने वजन से हजार गुणा अधिक वजन उठा ले जा सकता है?
4. 'लेडी बर्ड' क्या हैं?
5. हिरण की आकृति का द्वीप कहां स्थित है?
6. गरीबों की गाय किस पशु को कहा जाता है?
7. हाथी दिवस कब मनाया जाता है?
8. विश्व का एकमात्र जम्हाई लेने वाला पक्षी कौन है?
9. मधुमक्खियां आपस में किस प्रकार बातें करती हैं?
10. वायुयान की तरह कौन पक्षी उड़ता है?
11. कौन-सा फल खाने में रसगुल्ले की तरह दिखने वाला रसदार और मीठा होता है?
12. 'मनपसंद' किस फल एक की किस्म है?
13. 'जड़ी-बूटियों का खजाना' किस भारतीय राज्य को कहा गया है?
14. किस भारतीय राज्य को 'नारियल भूमि' कहा जाता है?
15. कौन-सा पक्षी मनुष्य की तरह चलता है?
16. किस प्रजाति की मादा पक्षी अपने बच्चों को जेलनुमा घोंसले में सुरक्षित रखती है?
17. कौन-सा वन्य प्राणी भोजन धोकर खाता है?
18. भालू का सर्वाधिक प्रिय आहार क्या है?
19. फारेस्ट हिल्स नगर कहां स्थित है?
20. अंगूरों का देश किसे कहा जाता है?
21. रेशम के कीड़े किस वृक्ष पर पाले जाते हैं?
22. केवल बांस के पत्ते खाकर रहने वाले वन्य प्राणी का क्या नाम है?
23. कौन-सा जलीय जीव अपनी एक आंख बंद करके सोता है?
24. चंदन के वन सर्वाधिक किस राज्य में मिलते हैं?
25. पृथ्वी के सर्वाधिक विशाल प्राणी ब्लू व्हेल का मुख्य भोजन क्या है?

उत्तर : 1. सम्राट प्रियदर्शी अशोक, 2. पालास बिल्ली, 3. चींटी, 4. रंगीन और सुन्दर कीट, 5. उत्तरी द्वीप (न्यूजीलैंड), 6. बकरी, 7. 13 मार्च, 8. तोता, 9. नृत्य ध्वनि और गति पर आधारित सांकेतिक भाषा में, 10. कैलिफोर्नियन कोंडोर, 11. लीची, 12. आम, 13. उत्तरांचल, 14. केरल, 15. पेंग्विन, 16. लाल चोंच हार्नबिल, 17. रैकुन, 18. शहद (मधु), 19. यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका, 20. फ्रांस, 21. शहतूत, 22. पंडा, 23. सोंस (डॉल्फिन) 24. कर्नाटक, 25. क्रील।

खेल क्विज़

—कमलेश प्रसाद

1. एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में छक्के मारने का दोहरा शतक ठोकने वाले खिलाड़ी का क्या नाम है?
   (क) विरेन्दर सहवाग (ख) विवियन रिचर्ड्स
   (ग) शाहिद अफरीदी
2. भारत की तरफ से टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक रन बनाने का रिकार्ड किस भारतीय बल्लेबाज के नाम दर्ज है?
   (क) सुनील गावस्कर (ख) सचिन तेंदुलकर
   (ग) मोहम्मद अजहरुद्दीन
3. श्रीलंका के मशहूर क्रिकेटर मुथैया मुरलीधरन ने किसी देश की लड़की से विवाह रचाया है?
   (क) भारत (ख) श्रीलंका
   (ग) पाकिस्तान
4. भारत के उस क्रिकेटर का नाम बताओ जिसे एकदिवसीय क्रिकेट में पाकिस्तान के खिलाफ सबसे अधिक रनों की पारी खेलने का गौरव प्राप्त है?
   (क) सचिन तेंदुलकर (ख) महेन्द्र सिंह धोनी
   (ग) सौरव गांगुली
5. भारत में कितने मैदानों पर एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों का आयोजन किया जा चुका है?
   (क) 37 (ख) 25
   (ग) 20
6. भारत की महिला क्रिकेट टीम ने किस टीम के खिलाफ पहली बार विश्व कप का फाइनल खेला?
   (क) इंग्लैंड (ख) न्यूजीलैंड
   (ग) ऑस्ट्रेलिया
7. पाकिस्तान क्रिकेट टीम के प्रशिक्षक बॉब वूल्मर का जन्म भारत के किस शहर में हुआ था?
   (क) मुंबई (ख) कानपुर
   (ग) दिल्ली
8. क्रिकेट के खेल में पहली बार तटस्थ अंपायरों ने किस देश में टेस्ट मैच खिलाया था?
   (क) इंग्लैंड (ख) ऑस्ट्रेलिया
   (ग) पाकिस्तान
9. एक सौ टेस्ट मैचों में अंपायरिंग करने का गौरव किस अंपायर को प्राप्त है?
   (क) डेविड शेफर्ड (ख) स्टीव बकनर
   (ग) डिकी बर्ड
10. यह तस्वीर किस खेल की है?
    (क) हाकी
    (ख) बेसबाल
    (ग) गोल्फ।



उत्तर : 1. (ग), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (क), 6. (ग), 7. (ख), 8. (ग), 9. (ख), 10. (ग)

—262-ए, पॉकेट-एफ, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

लौट आया गुरु

—शमशेर अहमद खान

बहुत समय पहले की बात है, उस समय मगध सम्राट अशोक का शासन था। सम्राट अशोक नए-नए बौद्ध धर्मानुयायी बने थे। उनके शासन काल में बौद्ध धर्म काफी फल-फूल रहा था। लोग भी बौद्ध धर्म अपनाने लगे थे। सम्राट ने भी इस धर्म को फैलाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने अनेक संघारामों और विहारों का निर्माण करवाया। ऐसा ही एक संघाराम उन्होंने पाटलिपुत्र के निकट बनवाया। इसका नाम रखा अशोकाराम बौद्ध विहार। सम्राट को यह बौद्ध विहार बहुत प्रिय था। इस बौद्ध विहार का सारा खर्च सम्राट स्वयं उठाते थे। यह विशाल विहार था जिसमें साठ हजार बौद्ध भिक्षु रह सकते थे। इस विहार के प्रभारी थे महास्थविर मोग्गलिपुत्त तिस्स।

सम्राट को महास्थविर मोग्गलिपुत्त तिस्स ने ही बौद्ध धर्म में दीक्षा दी थी। महास्थविर के सुसंवाद से ही सम्राट श्रद्धालु बौद्ध बने थे।

सम्राट के शासनकाल में बौद्ध भिक्षुओं की खूब सेवा की जाती थी। राजकीय उदारता का लाभ उठाने के लिए ऐसे लोग बौद्ध भिक्षु बनने लगे थे जिनका बौद्ध धर्म से कुछ लेना-देना नहीं था। ऐसे आलसी और निकम्मे लोग बौद्ध भिक्षुओं के वेश में मुफ्त का माल उड़ाने में विश्वास रखते थे। इन नकली बौद्ध भिक्षुओं में बौद्ध धर्म के नियमों के पालन में कोई रुचि नहीं थी। ये न तो नियमों का पालन करते और न ही व्रत-उपवास रखते बल्कि जो बौद्ध भिक्षु इन नियमों का पालन करते थे, वे उनसे लड़ते और उनका मजाक उड़ाते। महास्थविर को यह देखकर बहुत दुख होता था। उन्होंने इस सिलसिले में सम्राट से भी बातचीत की लेकिन सम्राट ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। दुखी होकर महास्थविर वहां से अहोगंग पर्वत पर चले गए।

नकली और असली बौद्ध भिक्षुओं के बीच उभरे मतभेद की कहानी दूर-दूर तक पहुंचने लगी।



धीरे-धीरे यह कहानी सम्राट के कानों तक पहुंची। इससे वह बहुत चिंतित हुए। उनके बीच उभरे मतभेद को दूर करने के लिए उन्होंने अपने एक विश्वासपात्र अमात्य को वहां भेजा। अमात्य ने वहां जाकर परस्पर मेल-मिलाप कराने का बहुत प्रयास किया लेकिन वे उनमें मैत्रीभाव न ला सके। आखिरकार विवश होकर राजदंड का प्रयोग करते हुए अमात्य ने कुछ उदंड बौद्ध भिक्षुओं को सख्त सजा दे डाली।

बौद्ध भिक्षुओं को सख्त सजा देने की बात जब सम्राट के कानों तक पहुंची, तब वे बहुत विचलित हुए। वे आनन-फानन में अशोकराम बौद्ध विहार गए। उन्होंने भिक्षुओं से पूछा, ''भन्तो! भिक्षुओं को सख्त सजा देने में किसे दोष लगेगा?'' कुछ भिक्षुओं ने कहा, इसका सारा दोष तुम्हें लगेगा क्योंकि तुमने ही सजा देने के लिए अमात्य को यहां भेजा था। फिर कुछ भिक्षुओं ने कहा, ''राजन! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है।'' दयालु सम्राट भिक्षुओं की दो तरह की बातें सुनकर हैरत में पड़ गया। सम्राट ने पूछा, ''अच्छा बताओ, इसका सही उत्तर कौन दे सकता है?''

भिक्षुओं में शांति छा गई। फिर वे एक स्वर में बोले, ''राजन! इसका सही उत्तर महास्थविर मोग्गलीपुत्त तिस्स ही दे सकते हैं।'' सम्राट को अपने धर्मगुरु की याद आ गई। उन्होंने उन्हें ससम्मान अहोगंग पर्वत



से पाटलिपुत्र बुलवाया और उनके ठहरने की व्यवस्था राजोद्यान में करवा दी।

सम्राट राजोद्यान में महास्थविर से मिलने गए। कुशलक्षेम के बाद सम्राट ने महास्थविर से विनम्रतापूर्वक पूछा, ''भंते! क्या अशोकाराम में अमात्य द्वारा भिक्षुओं के साथ की गई सख्त कार्रवाई का अपराध मुझे लगेगा?'' महास्थविर बोले ''राजन! जब तक कर्म के साथ-साथ मन दोषी नहीं होता, तब तक कोई दोष नहीं होता। राजन! तुमने अमात्य को सत्कर्म करने के लिए भेजा था, किसी को सख्त दंड देने के लिए नहीं।''

महास्थविर का उपदेश सुनकर सम्राट का मन शांत हो गया। अशोकाराम बौद्ध विहार के भिक्षुओं के मतभेद दूर करने के लिए महास्थविर की अध्यक्षता में विशाल भिक्षु सम्मेलन का आयोजन किया

गया। महास्थविर के साथ सम्राट परदे की ओट में बैठ गए। इस सम्मेलन में एक-एक भिक्षु महास्थविर के पास आता। महास्थविर उससे प्रश्न पूछते। जो भिक्षु समुचित उत्तर नहीं दे पाता, वह उसका चीवर उतरवाकर उसकी प्रवज्या छीन लेते और उसे सफेद वस्त्र पहनवा देते।

इस तरह अशोकाराम बौद्ध विहार नकली बौद्ध भिक्षुओं से मुक्त हो गया। उसके बाद इस विहार में व्रत, उपवास और विनय धर्म का पालन बिना किसी रुकावट के होने लगा।

इस घटना का कालांतर में सम्राट पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने इसे शिलालेखों और स्तम्भों पर उत्कीर्ण करवा दिया। ❑

—बी-1/44, डी.एल.एफ. दिलशाद एक्सटेंशन-II साहिबाबाद गाजियाबाद-201005

पहेलियां

250

—सूरज कुमार सक्सेना

1. धूप लगे पैदा हो जाता,
   छांव लगे कुम्हलाय।
   सबने उसका अनुभव पाया,
   हवा लगे मर जाए।

2. बटन दबाते चल पड़ता है,
   सुस्ती नहीं दिखाता है।
   इतनी सारी हवा न जाने,
   कहां से चुरा लाता है।

3. माता सबकी वह कहलाए,
   सबका बोझ उठाए।
   कहीं उसे हम भूल न जाएं,
   रहती गले लगाए।

4. बचपन हरा, बुढ़ापा लाल,
   जो भी खाए वह बेहाल।
   नाम बताओ बाबू लाल,
   हो जाओगे माला-माल।

—द्वारा श्री ब्रजकिशोर अश्क, प्रकाश नगर नरकटियागंज, प. चम्पारण, (बिहार)

उत्तर : 1. परवल, 2. घड़ी, 3. पृथ्वी, 4. चिंता।

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(जून 2005)

इस कूपन के साथ 25 जून, 2005 तक 'गर्मियों की छुट्टियां और सैर-सपाटा' शीर्षक पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत चित्र को बाल भारती में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को दो वर्ष एवं द्वितीय को एक वर्ष तक हमारी ओर से बाल-भारती मुफ्त भेजी जाएगी।

नाम ..... आयु .....

पता .....

.....

इस प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

आओ बादल भइया

—डॉ. हरीश निगम

लू ने बहुत सताया,
गर्मी ने तड़पाया,
अब तो जी घबराया
आओ बादल भइया!

ताल-नदी तक प्यासे,
सारे कुएं रुआंसे,
पानी मिले कहां से?
छाओ बादल भइया!

अंदर बाहर होते,
नहीं चैन से सोते,
दिवस बेसुरे ढोते
गाओ बादल भइया!

—प्रेम विहार कालोनी, प्रेमनगर
पो.बा. नं. 96, सतना-485001 (म.प्र.)

गर्मी और सूरज

—यशवंत गर्ग

तपता सूरज भीषण गरमी,
गरम तवे-सी सड़कें सारी।
गाल पर पड़ते लू के थप्पड़,
बाहर निकलना पड़ता भारी।

खाना-पीना नहीं सुहाए,
नींद नहीं ऐसे में आए।
बीते अब कैसे दोपहरी,
कैसे किसको शाम सुहाए।

हवा नहीं कहीं से मिलती,
माथे से चू रहा पसीना।
पार्क और चौराहे चुप हैं,
बना कठिन है जीवन जीना।

अंगारों की फसल उगाकर,
लू के बम, गोले बरसा कर।
दिन पूरा ही गुजर गया है,
सब ही दिखते आहत-आहत।

शायद सबके हिस्से का सुख,
तुमको मिलता हमें सता कर।
मंदी चलो, पवन तुम चल दो,
कुछ तो आकर दे दो राहत।

—ई-106, शास्त्री नगर, मेरठ-250004



250

पुस्तक-समीक्षा

मोगली... मोगली... मोगली...

—शेरजंग गर्ग

पुस्तक	:	मोगली के कारनामे
लेखक	:	रुडयार्ड किपलिंग
रूपान्तर	:	संजीव दत्त
प्रकाशक	:	मेधा बुक्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली
पृष्ठ	:	191
मूल्य	:	150 रुपए



मोगली नाम भारत के बच्चे-बच्चे की जुबान पर उस समय चढ़ गया था जब दूरदर्शन पर प्रति सप्ताह *चड्ढी पहन के फूल खिला है* गीत गूंज उठता था। अपना सारा काम छोड़-छाड़कर हर परिवार यह आनंदप्रद एवं सूचनाप्रद धारावाहिक देखने में जुट जाता था। उल्लेखनीय है कि मोगली का चरित्र रुडयार्ड किपलिंग द्वारा सर्जित है जो उन्होंने अपनी पुस्तक *'द जंगल बुक'* के माध्यम से विकसित किया। यही किताब *'मोगली के कारनामे'* के रूप में हिंदी में आई है। इस का रूपांतर किया है संजीव दत्त ने।

रुडयार्ड किपलिंग अपनी कहानियों और कविताओं के लिए भी विश्वविख्यात थे। उनका जन्म भारत में ही मुंबई में सन् 1865 में हुआ था। उन्होंने मध्य प्रदेश के सिवनी क्षेत्र के जंगलों को पृष्ठभूमि में रखकर, वहां रहने वाले जीव-जंतुओं को कथा का पात्र बनाकर मोगली के *कारनामे* का ताना-बाना बुना है। इस पुस्तक के रूपांतरकर्ता संजीव दत्त ने बहुत ही रोचक, आनंदप्रद तथा लुभावनी लेखन शैली का प्रयोग किया है। सच्चाई तो यह है कि संजीव दत्त रूपांतर करते-करते जंगली चरित्रों में पूर्णत: लीन हो गए हैं जिसके कारण कथा के सारे पात्र हमारे सामने चलते-फिरते चित्रों के रूप में नजर आते हैं। मोगली, शेरखान, बघीरा, काला चीता, शेरखान के जूठनखोर चमचे जैसे पात्रों के अनोखे, भोले और सहज प्रसंगों से यह पुस्तक रोमांचक और कुछ रोचक खोजती हुई, खेलती हुई, चहकती हुई, फुदकती हुई जिंदगी का दर्पण बन गई है। जंगली जानवरों के स्वभाव, खान-पान, मौज-मस्तियों, व्यवहारों, नाराजगियों, दोस्तियों, अठखेलियों को यह पुस्तक जीवंत रूप में पेश करते हुए जंगल का भरपूर परिचय देती है।

कहानी का अंत अत्यंत नाटकीय ढंग से हुआ है। मोगली कहता है, "आदमियों के झुंड और भेड़ियों के झुंड दोनों ने ही मुझे बिरादरी से बाहर कर दिया है। अब मैं जंगल में अकेले ही शिकार करूंगा।"

"और हम चारों तुम्हारे साथ शिकार करेंगे।" मोगली के भाइयों यानी माता भेड़िया के चारों बेटों ने कहा।

तो इस तरह मोगली जंगल में अपने भाइयों के साथ शिकार करने लगा। लेकिन वो हमेशा जंगल में नहीं रहा। क्योंकि कई बरस जंगल में रहने के बाद मोगली वापस इंसानों की दुनिया में आ गया और उसने शादी करके अपना घर बसा लिया।

बच्चो, घर बसाने की कहानी बड़ों के लिए है तुम्हारे लिए नहीं।

कहा जा सकता है कि इस पुस्तक को पढ़ना जंगली जीवन की गहराई से गुजरना है। ❑

—एच. 43 (भूतल) साउथ एक्स-1
नई दिल्ली-110049

नए ग्राहक बनने/सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की सूचना के लिए कूपन

मैं बाल भारती

- ❑ 70 रुपये में एक वर्ष
- ❑ 135 रुपये में दो वर्ष
- ❑ 190 रुपये में तीन वर्ष

के लिए मंगाना चाहता/चाहती हूं। मैं उचित राशि का डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनीऑर्डर नं.....दिनांक.....भेज रहा हूं/रही हूं।(उचित बॉक्स पर निशान लगाएं)

- मेरी वर्तमान सदस्यता.....महीने में समाप्त हो रही है। सदस्यता के नवीकरण के लिए एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष का शुल्क ऊपर दिए विवरण के अनुसार भेज रहा/रही हूं।
- मेरा पता बदल गया है। कृपया अब पत्रिका नीचे दिए पते पर भेजें।

(जो पंक्तियां लागू न हों, उन्हें काट दें।)

हस्ताक्षर .....

नाम.....

पता.....

.....

.....

पिन.....

वर्ग : विद्यार्थी/शिक्षक /संस्था/अन्य

सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की स्थिति में नीचे बने बॉक्स में अपनी सदस्यता संख्या लिखें...

- दिल्ली से प्रकाशित हमारी पत्रिकाएं :
  योजना (अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, पंजाबी, उड़िया), आजकल (हिंदी, उर्दू), बाल भारती (हिंदी), कुरुक्षेत्र (हिंदी, अंग्रेजी)
- बाल भारती, योजना, आजकल, कुरुक्षेत्र की शुल्क की दरें :
  • वार्षिक : 70 रुपये • द्विवार्षिक : 135 रुपये • त्रिवार्षिक : 190 रुपये
- विदेशी ग्राहकों के लिए उक्त पत्रिकाओं के वार्षिक चंदे की दरें (केवल रुपयों में) :
  • पड़ोसी देश : 500 रुपये • अन्य देश : 700 रुपये
- डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनी आर्डर निदेशक, प्रकाशन विभाग के नाम सदस्यता कूपन के साथ निम्न पते पर भेजें :
  विज्ञापन तथा प्रसार व्यवस्थापक, ईस्ट ब्लॉक-4,
  लेवल-7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066
- कृपया पत्रिका भेजना शुरू करने के लिए हमें 8-10 सप्ताह का समय दें।


कैजी
और
सबसे अच्छी ड्रेस
मोनू ! तुम्हारे हाथ में कैमरा ?
हां, यह इम्पोर्टेड डिजिटल कैमरा है !
© INTERCOSMOS MOVIE FEATURES 2004
इसे मेरे चाचा ने अमरीका से भेजा है ! मजेदार बात यह है कि इससे 15 सैकेंड के बाद फोटो प्रिन्ट भी निकल आती है !
तब तो एक मेरी फोटो खींच दो प्लीज !
एक मिनट ! यह ड्रेस कैसी लगेगी मोनू ?
चलो, स्माइल दो !
इसमें संयोग से केवल एक रील बची है !
बहुत सुंदर !
ठहरो प्लीज ! मेरे पास इससे भी अच्छी ड्रेस है, अभी पहन कर आती हूं !


जल्दी ही-
वह शानदार ड्रेस है। अब खींचो!
रेडी! स्माइल प्लीज!
मगर तभी-
अरे रुको-रुको! मेरे पास तो इससे भी अच्छे कपड़े हैं, एकदम माडर्न कपड़े!
!
तुरन्त-
अब खींचो मोनू!
रेडी! वन-टू...
ओह! ठहरो मोनू!
क्यों, क्या हुआ?
मम्मी की अलमारी में तो मेरी एक सबसे अच्छी ड्रेस पड़ी है...क्यों ना उसे पहन लूं!
!?


थोड़ी ही देर में-
अब बताओ, इस ड्रेस में कैसी लग रही हूं! अब खींचो, शानदार तस्वीर आएगी!
ओके! स्माइल दो...
ओह! मोनू... रुक जाओ प्लीज!
क्यों? अब क्या हुआ केजी?
कहीं कोई इससे भी बढ़िया ड्रेस याद आ गई!?
हां, ठीक समझे। तुम कितने समझदार हो मोनू!
!?
मैं अब वह ड्रेस पहन कर आती हूं, जो लंदन से मेरे पापा लाये थे!
??

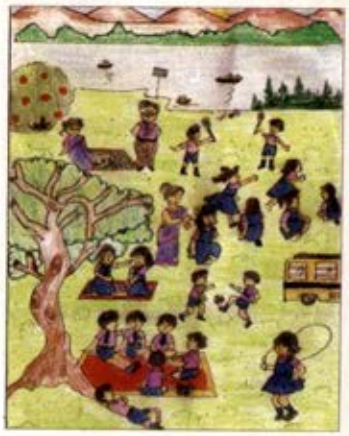

शीघ्र ही –
अब खींचो!
रेडी! स्माइल प्लीज! वन- टू...
..थ्री!
क्लिक
थैंक्यू!
फोटो खिंच गई -
अब तस्वीर दिखाओ!
यह देखो।
म-मगर... इसमें मैं कहां हूं मोनू!?
कोई बात नहीं केजी! इसमें तुम्हारी सबसे अच्छी ड्रैस की फोटो आई है!
समाप्त

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

मार्च 2005 के पुरस्कृत चित्र

शीर्षक : स्कूल की पिकनिक

प्रथम पुरस्कार



अकसा नगीन मो. मुशताक अहमद (12 वर्ष)
द्वारा-एस आर शाह समी,
एस.टी.डी. चिमनशावली,
यूनिवर्सिटी रोड, अमरावती,
महाराष्ट्र।

इन्हें दो वर्ष तक 'बाल भारती' मुफ्त भेजी जाएगी।

द्वितीय पुरस्कार



अरुणोदय (9 वर्ष)
द्वारा श्रीमती रीणा रानी (शिक्षिका), मो.-समीर नगर,
पो. कोशी कॉलेज,
जिला-खगड़िया (बिहार-851204)

इन्हें एक वर्ष तक 'बाल भारती' मुफ्त भेजी जाएगी।

प्रोत्साहन पुरस्कार



अलका श्रीवास्तव (13 वर्ष)
द्वारा नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, 522/3 बी,
बेली कालोनी, शिव मन्दिर के पास,
राजापुर, इलाहाबाद, (उ.प्र.)।

इन्हें तीन माह तक 'बाल भारती' मुफ्त भेजी जाएगी।

निम्नलिखित बच्चों के प्रयास भी सराहनीय है:
सुमति श्रीवास्तव (बीगोर, एटा), पारुल चौधरी (पिकौरा कुंवर, बस्ती)

आर एन 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी.एल.-12034/2003-05
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू. (डी.एन.)-56/2003-5

RN 699/57
Postal Regd. No. DL-12034/2003-05
Licenced U (D.N.)-56/2003
to post without pre-payment at RMS Delhi



उमाकांत मिश्र, निदेशक, प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित और मुद्रित।
मुद्रक : तारा आर्ट प्रेस, बी-4 हंस भवन, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष : 23378626, 23379686
संपादक : विभा जोशी